Photo Exhibition on Mahatma Gandhi's Life and Works

Mahatma Gandhi's life is an example of purposeful and meaningful life of highest order whereas his works are inexhaustible. He was a unique leader who transcended boundaries in his ceaseless striving for Truth and practice of nonviolence with compassion for all.

The story of this Great man needs to be repeatedly told, especially to our younger generation, in countless ways. One way is to look at him through photographs also. It is interesting to note that Gandhiji was one among the most photographed persons in the world of his time when photography itself was in nascent stage. Many leading photographers of his time captured his image in black and white medium, some of which in combination, presents a photographic story of this great man. Out of such 10000 photographs, a set of 100 selected photographs are presented here in the form of a Photo Exhibition depicting his Life and Works. These are all original photographs, brought out of archival collection of National Gandhi Museum, New Delhi on the special occasion of 150th birth anniversary of Mahatma Gandhi. It is our humble effort towards taking the message of Gandhi to the masses during 'Gandhi: 150' celebrations.

महात्मा गांधी के जीवन व कार्यों पर आधारित चित्र प्रदर्शनी

महात्मा गांधी का जीवन उच्च श्रेणी के उद्देश्यपूर्ण व अर्थपूर्ण जीवन का एक उदाहरण है और उनके कार्य काफी व्यापक हैं। वह एक अद्भुत नेता थे जिन्होंने सत्य के प्रति अपनी अटूट आस्था और अहिंसा के व्यवहार से देश और काल की सीमाओं को लांघ दिया और सभी के प्रति करूणा का भाव बनाये रखा।

इस महान व्यक्ति की कहानी को, विशेषकर हमारी युवा पीढ़ी को निरतंर, अनगिनत तरीकों से बताए जाने की आवश्यकता है। उनको जानने का एक माध्यम उनके चित्र भी हैं। यह जानना रोचक है कि गांधीजी उन व्यक्तियों में से हैं जिनकी दुनियां में उनके समय में सबसे अधिक तस्वीरें खींची गई। उस समय छायाचित्रण (फोटोग्राफी) अपने शुरूआती दौर में था। उस समय के बहुत से अग्रणी छायाचित्रकारों (फोटोग्राफर्स) ने श्वेत व श्याम माध्यम में उनके अनेकों चित्र खींचे हैं जिनमें से कुछ चित्रों के संयोजन से इस महान् व्यक्ति की चित्रमय गाथा को दर्शाया जा सकता है। ऐसे 10000 चित्रों में से 100 चुनिंदा चित्रों को लेकर यह चित्र प्रदर्शनी तैयार की गई है जिसमें उनके जीवन व कार्यों को दर्शाया गया है। यह सभी चित्रों की मूल प्रतियां हैं जिन्हें राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय, नई दिल्ली के अभिलेखागार से महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के विशेष अवसर पर लिया गया है। 'गांधीः 150' के समारोहों के दौरान गांधी के संदेश को जन–जन तक ले जाने का हमारा यह एक विनम्र प्रयास है।

ANCESTRAL HOUSE

Here at Porbandar in Kathiawad, on October 2, 1869 was born Mohandas Karamchand Gandhi, the youngest of four children.

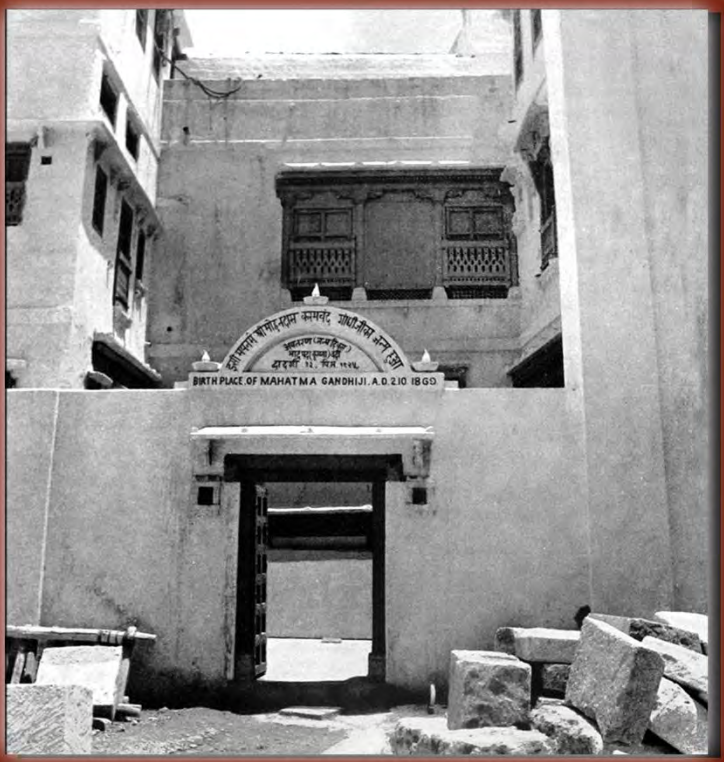

पोरबंदर के काठियावाड़ का यहीं वह घर है जहां चार बच्चों में सबसे छोटे मोहनदास करमचंद गांधी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को हुआ।

पैतृक घर

FATHER

Father of Mohan, Karamchand or Kaba Gandhi, had been Prime Minister in two Kathiawar states, he was known for his honesty, practical sense and loyalty. People from different religions often visited his house for religious discussion. This helped Mohandas imbibe equal regard for all faiths.

पिता

मोहन के पिता करमचंद या कबा गांधी काठियावाड़ के दो राज्यों के दीवान थे। अपनी ईमानदारी, व्यावहारिक समझ और भक्ति के लिए वे प्रसिद्ध थे। उनके घर पर विभिन्न धर्मों के लोग अक्सर धार्मिक चर्चा के लिये आया करते थे। मोहनदास पर सभी धर्मों के प्रति समान आदर का गहरा प्रभाव पड़ा।

MOTHER

Mohan's mother Putlibai, was an example of the traditional Hindu wife and mother, devoted to her family, deeply religious, and much given to fasting and prayer. These qualities had a great influence on her son.

मोहन की माता, पुतलीबाई, परम्परागत हिन्दू पत्नी और माता का एक उदाहरण थीं। वह अपने परिवार में लीन, नियमित पूजा–पाठ, उपवास करने वाली धार्मिक प्रवृति की महिला थीं। पुत्र मोहनदास पर इन गुणों का काफी प्रभाव पड़ा।

माता

MOHAN AT SEVEN

This was Mohan when he was seven years old, shy and averse to company. He played a few games, but did not have much fondness for play. And from his early years, he had a strange moral sense and would not hit back even when hit.

यह हैं सात वर्षीय मोहन, शर्मीले और एकांतप्रिय। उनकी खेलों के प्रति ज्यादा रूचि नहीं थी फिर भी वह कुछ खेल खेला करते थे। प्रारम्भ से ही वह नैतिकता के प्रति अतिसंवेदनशील थे और बदले की भावना उनमें बिल्कुल भी नहीं थी।

सात वर्षीय मोहन

ALFRED HIGH SCHOOL

Young Mohan had his early education at the Alfred High School at Rajkot. Though he had won a scholarship or two, he described himself as a mediocre student. But he was studious and worked his lesson with perseverance. Here he passed matriculation at the age of eighteen.

युवा मोहन ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा राजकोट स्थित एलफ्रेड हाई स्कूल से प्राप्त की। यद्यपि उन्हें एक या दो छात्रवृत्ति भी मिली, परन्तु उन्होंने स्वयं को एक मामूली दर्जे का विद्यार्थी ही माना। पर वह अध्ययनशील थे और स्कूल द्वारा दिया गया कार्य मेहनत से करते थे। 18 वर्ष की आयु में उन्होंने यहीं से 10वीं की परीक्षा उत्तीर्ण की।

एलफ्रेड हाई स्कूल

LAW STUDENT

After matriculation, Mohan went to England for legal studies. Here for a brief while, he was tempted to ape the English gentleman. But recovering from this craze, he led a simple life, cooked his own food, studied hard and qualified for the Bar in June 1891.

मैट्रिकुलेशन करने के बाद मोहन कानून की पढ़ाई करने इंग्लैंड गए। यहां कुछ समय के लिए उन्हें एक सभ्य अंग्रेज बनने का शौक चढ़ा। लेकिन इस सनक से उन्होंने जल्दी ही छुटकारा पा लिया और वह सरल जीवन जीने लगे, अपना भोजन भी स्वयं बनाने लगे, मेहनत से पढ़ाई की और जून 1891 में 'बार' के लिए उत्तीर्ण हुए।

कानून के विद्यार्थी

WITH COLLEAGUES

After two short visits to India in 1896 and 1901-1902, he settled down at Johannesburg as an advocate of the Transvaal Supreme Court. He employed his legal skill to defend the rights of poor indentured Indians.

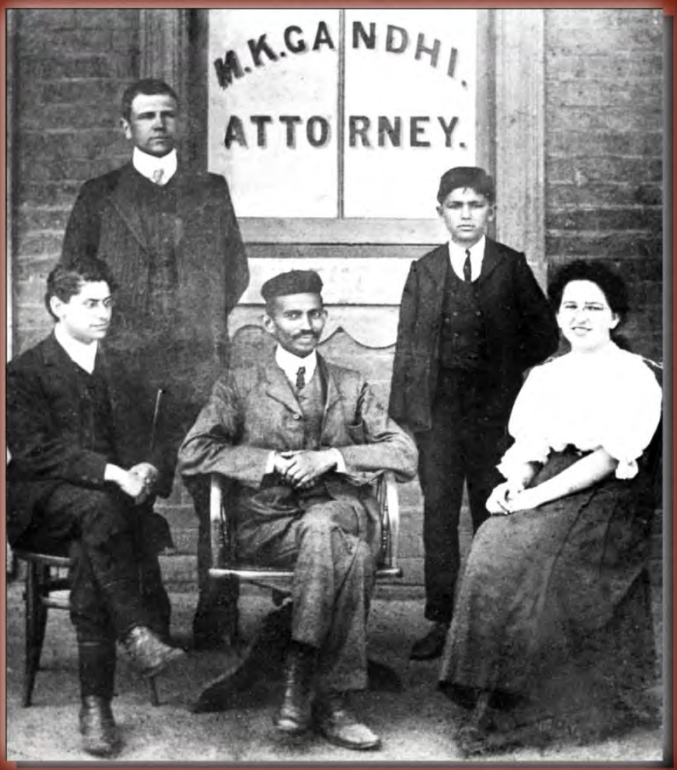

सन् 1896 और 1901–1902 में थोड़े समय के लिए भारत आने के पश्चात् वह ट्रांसवाल सुप्रीम कोर्ट के एक वकील के रूप में जोहानिसबर्ग में रहने लगे। वहां उन्होंने अपनी कानूनी योग्यता व कुशलता का उपयोग गरीब करारबद्ध भारतीयों के अधिकारों के संरक्षण के लिये किया।

सहकर्मियों के साथ

THREE MENTORS

There were at this time three great influences on Gandhiji—Raichandbhai, the Jain sage, Ruskin, whose book: Unto This Last taught him the dignity of a life of manual labour on the land, and Tolstoy, who led him to the truth that the kingdom of God is within one and not outside.

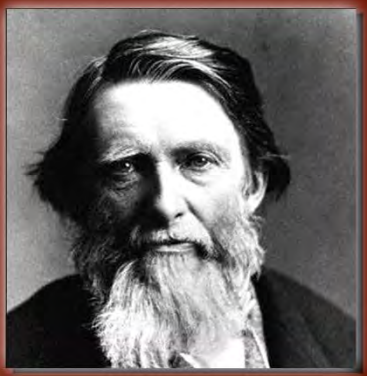

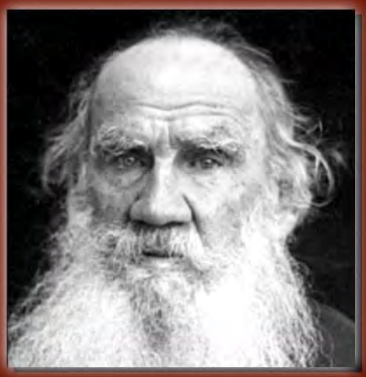

इस समय गांधीजी पर तीन महान् विभूतियों का प्रभाव पड़ा, रायचन्द भाई जो एक जैन संत थे, रस्किन, जिनकी पुस्तक 'अन्टू दिस लास्ट' से गांधीजी ने मजदूरों के जीवन में शरीर श्रम की गरिमा को समझा और टॉल्स्टॉय से इस सत्य को जानने के लिए प्रेरित हुए कि ईश्वर का साम्राज्य व्यक्ति के बाहर नहीं बल्कि उसके अंदर ही है।

तीन प्रेरणास्रोत

PHOENIX SETTLEMENT

The Phoenix Settlement which Gandhiji set up in 1904, a few miles from Durban, was his first experiment in Ashram or community life. Here along with his small band of Indian and European colleagues, he led a life of rustic simplicity, working on the soil with his own hands.

गांधीजी ने डरबन से कुछ मील की दूरी पर 1904 में फीनिक्स आश्रम की स्थापना की। यह सामुदायिक जीवन का उनका पहला प्रयोग था जहां थोड़े से भारतीयों और यूरोपीय सहकर्मियों के साथ उन्होंने अत्यंत साधारण जीवन अपनाया और खेती के लिए शरीर–श्रम किया।

फीनिक्स आश्रम

TOLSTOY FARM

Tolstoy Farm was set up in 1910 on land donated by Kallenbach, a German friend and co-worker of Gandhiji. All its inmates worked and lived together, observing the code of conduct and discipline befitting Ashram life.

गांधीजी ने अपने जर्मन दोस्त और सहकर्मी कैलनबैक द्वारा भेंट की गई जमीन पर 1910 में टॉल्स्टॉय फार्म की स्थापना की। यहां आश्रमवासी एक साथ रहते, कार्य करते और आश्रम के नियम व अनुशासन का पालन करते।

टॉल्स्टॉय फार्म

ZULU REBELLION

Very early in life, Gandhiji had realized that hatred cannot be conquered by hatred, but only by love. So, both during the Boer War of 1899-1902 and the Zulu Rebellion of 1906, he and his ambulance corps of Indian volunteers served in the relief of the wounded.

अपने जीवन के प्रारम्भ से ही गांधीजी को यह अनुभूति हो गई थी कि घृणा को घृणा से नहीं बल्कि प्रेम से जीता जा सकता है। अतः 1899–1902 के बोअर युद्ध और 1906 के जुलू विद्रोह, इन दोनों अवसरों पर गांधीजी और उनकी भारतीय स्वयंसेवकों की एम्बुलेंस कोर ने घायलों को प्राथमिक चिकित्सा के लिये अपनी सेवाएं दीं।

जुलू विद्रोह

MASS CERTIFICATE BURNING

When he found that Indians were compelled to give their finger-prints and have registration certificates, he pleaded hard for the abolition of that Black law. When his petitions failed, he organized in August 1908, the mass burning of registration certificates.

जब गांधीजी ने देखा कि भारतीयों को पंजीकरण के लिए अपनी अंगुलियों की छाप देने को बाध्य किया जा रहा है तब उन्होंने इस काले कानून की समाप्ति के लिये आवाज उठाई। जब उनकी याचिका पर कोई सुनवाई नहीं हुई तो उन्होंने अगस्त 1908 में पंजीकरण प्रमाणपत्रों का सामूहिक अग्निदाह आयोजित किया।

प्रमाणपत्रों का सामूहिक दहन

GOKHALE'S RECEPTION

The Indian Struggle in South Africa evoked much sympathy and caused much concern in India. Gopal Krishna Gokhale, founder of the Servants of India Society one whom Gandhiji was later to describe as his "political Guru", visited South Africa in October 1912 for a firsthand study of the situation.

दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के संघर्ष को लेकर बहुत सहानुभूति उमड़ रही थी और चिंता भी। गोपाल कृष्ण गोखले, सर्वेण्ट ऑफ इंडिया सोसाइटी के संस्थापक, जिन्हें गांधीजी ने बाद में अपना 'राजनैतिक गुरु' भी कहा, उन्होंने स्थिति की सही–सही जानकारी लेने के लिए अक्टूबर 1912 में दक्षिण अफ्रीका की यात्रा की।

गोखले का स्वागत

EPIC MARCH, 1913

When the Government proved unresponsive to petitions, Gandhiji led a historic march of thousands of Indians—men, women and children—from Natal into the Transvaal. The people suffered many privations; Gandhiji and his colleagues were arrested and imprisoned.

जब सरकार ने याचिकाओं पर ध्यान नहीं दिया तब गांधीजी ने सैकड़ों भारतीयों–पुरूषों, महिलाओं और बच्चों–के साथ नाताल से ट्रांसवाल के लिए ऐतिहासिक पैदल मार्च की शुरूआत की। इसमें लोगों को बहुत से कष्टों का सामना करना पड़ा और गांधीजी तथा उनके सहकर्मियों को भी गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया।

महान कूच, 1913

AS A SATYAGRAHI

The Passive Resistance and Satyagraha movements took the form of peaceful disobedience of oppressive laws and braving the consequences of such disobedience. South Africa had been the laboratory where he had invented, tried and perfected the technique of satyagraha—weapon to redress the wrong and injustice.

निष्क्रिय प्रतिरोध और सत्याग्रह आंदोलनों ने दमनकारी कानूनों की शांतिपूर्ण अवज्ञा का रूप धारण कर लिया और ऐसी अवज्ञा का दंडरूपी प्रतिफल भारतीय समुदाय ने बहादुरी से भुगता। इस प्रकार दक्षिण अफ्रीका अन्याय और बुराई को दूर करने की प्रयोगशाला बना जहां उन्होंने निर्णायक सत्याग्रह तकनीक का अविष्कार किया, उसका प्रयोग किया और उसे परिष्कृत किया।

सत्याग्रही के रूप में

WITH LIFE PARTNER

Kasturba, his devoted wife and companion, had shared his trials and travails in South Africa. In protest against the Serle judgement, declaring Indian marriages null and void and reducing Indian wives to the status of concubines, Kasturba had led a group of women from Phoenix to prison.

कस्तूरबा, उनकी श्रद्धावान पत्नी व सहयोगिनी, जो दक्षिण अफ्रीका में कठिन परिस्थितियों में गांधीजी के दु:ख–दर्द में बराबर की भागीदार बनी। सर्ले निर्णय जिसमें भारतीय पद्धति से सम्पन्न विवाह को अवैध घोषित कर भारतीय समुदाय की स्त्रियों को अपमानित किया गया, उसके विरूद्ध कस्तूरबा ने फीनिक्स की महिलाओं के विरोध मार्च का नेतृत्व किया और जेल भी गईं।

जीवन–संगिनी के साथ

SABARMATI ASHRAM

In May 1915, Gandhiji set up an Ashram at Kochrab, near Ahemdabad; but in 1917, on the outbreak of plague there, he shifted it to the bank of the Sabarmati river. Gandhiji took into his Ashram an untouchable family, risking even the stoppage of funds from supporters and opposition from friends.

मई 1915 में गांधीजी ने अहमदाबाद के निकट कोचरब में एक आश्रम की स्थापना की लेकिन 1917 में वहां प्लेग फैल जाने के कारण उन्होंने इस आश्रम को साबरमती नदी के किनारे स्थानांतरित कर दिया। यहां उन्होंने एक अछूत परिवार को भी रहने की स्वीकृति दे दी जिससे नाराज़ होकर समर्थकों ने आश्रम को चंदा देना बंद कर दिया और उन्हें मित्रगणों के विरोध का भी सामना करना पड़ा।

साबरमती आश्रम

SATYAGRAHA IN ACTION

Bapu, for that was what he had now become to all people, had occasion to test and use his weapon of Satyagraha first at Champaran, in 1917, for the abolition of the evil indigo labour system; then, in 1918 in Kheda, in a mass refusal to pay land-revenue during a year of drought and the failure of crops.

गांधीजी जो अब सबके प्रिय बापू बन गए थे, 1917 में, चम्पारन में उन्हें पहली बार अपने सत्याग्रह–शस्त्र के परीक्षण का अवसर मिला। यह सत्याग्रह किसानों से जबरदस्ती नील की खेती करवाये जाने के विरूद्ध चला इसके पश्चात् 1918 में खेड़ा में, सूखा पड़ने और फसल बरबाद होने के कारण किसानों के कर देने से सामूहिक इनकार के रूप में चला।

सत्याग्रह का प्रारंभ

MILL WORKERS STRIKE

In Ahemdabad, textile labour had gone on strike for fair wages and bonus and the mill-owners had declared a lock-out. Finally, the mill-owners and workers reached a settlement after Gandhiji's mediation. The Ahemdabad Textile Labour Union became a model of Trade Union Movement in India.

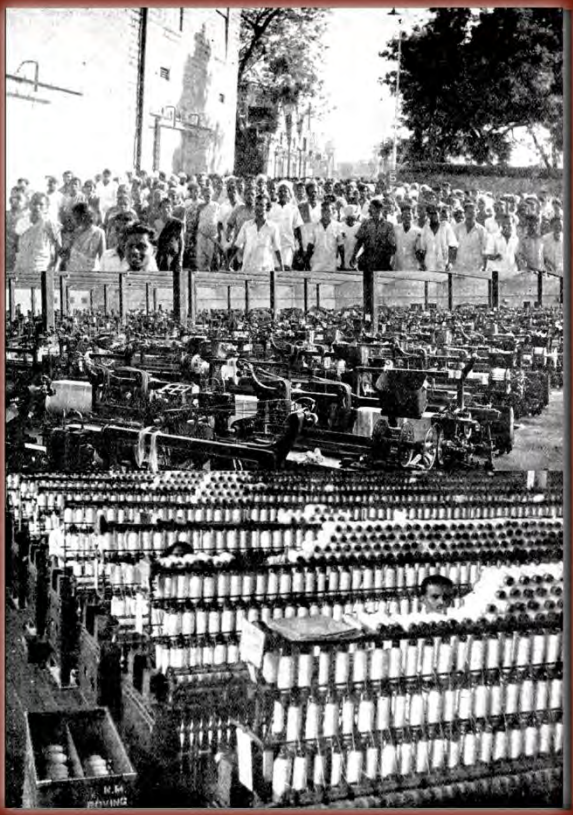

अहमदाबाद में कपड़ा मज़दूर, वेतन वृद्धि और बोनस की मांग को लेकर हड़ताल पर चले गए, और मिल मालिकों ने तालाबंदी की घोषणा कर दी। अंततः गांधीजी की मध्यस्थता से मिल मालिकों और मज़दूरों के बीच समझौता हुआ। इस प्रकार अहमदाबाद कपड़ा मज़दूर संघ भारत में मज़दूर आंदोलन का आदर्श बना।

मिल मज़दूरों की हड़ताल

JALLIANWALA BAGH

When a crowd of unarmed people gathered at Jallianwala Bagh to protest against the Rowlatt Act in 1919 the British Military fired on them indiscriminately killing hundreds of men and women. This outrage and denial of justice deeply shocked Gandhiji.

जब 1919 में जालियांवाला बाग में निहत्थे लोग रॉलट कानून का शांतिपूर्वक विरोध कर रहे थे तब ब्रिटिश सेना ने उनपर अंधाधुंध गोलियां बरसा दी जिससे सैकड़ों स्त्री–पुरूष मारे गए। इस घोर अत्याचार और न्याय की अवहेलना से गांधीजी स्तब्ध रह गए।

जालियांवाला बाग

IN GANDHI CAP

In the national movement of non-co-operation which Gandhiji started, Khadi became the 'livery of freedom'. His simple white head-gear, the Gandhi cap, became the symbol of national self-respect and revolt against foreign rule.

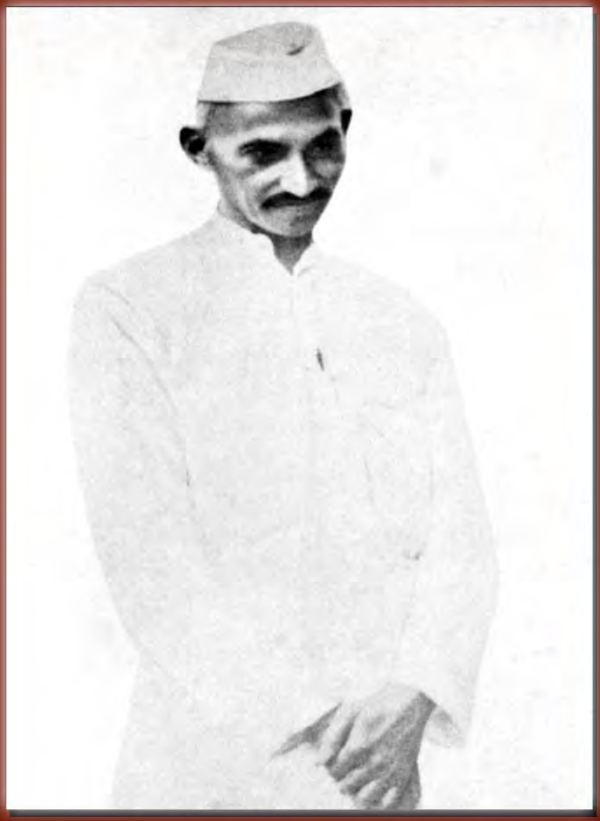

गांधीजी द्वारा शुरू किये गये राष्ट्रीय असहयोग आंदोलन में खादी ने 'स्वतंत्रता की प्राणशक्ति' का स्वरूप ले लिया। उनके सिर को ढकने वाली साधारण सी टोपी, 'गांधी टोपी', राष्ट्रीय आत्म–सम्मान और विदेशी शासन के खिलाफ बगावत की एक निशानी बन गई।

गांधी टोपी में

TRIPLE BOYCOTT

The non-co-operation movement was a movement involving a triple boycott — boycott of British cloth, British courts and Government educational institutions. The Congress had resolved on boycott on April 1921. In this campaign, thousands of people joined, cheerfully courted imprisonment.

असहयोग आंदोलन में तीन चीजों का बहिष्कार शामिल था – अंग्रेजी कपड़े, अंग्रेजी अदालतें और सरकारी शैक्षणिक संस्थाएं। कांग्रेस ने अप्रैल 1921 में बहिष्कार का प्रस्ताव स्वीकृत किया। इस अभियान में हजारों लोगों ने भाग लिया और खुशी–खुशी जेल गए।

तीन बहिष्कार

THE GREAT TRIAL

The mass movement was pledged to non-violence, and so when violence broke out at a village called Chauri Chaura, Gandhiji suspended it. Government took advantage of it and arrested Gandhiji. On March 18, 1922 at a historic trial at Ahemdabad, he was sentenced to six years imprisionment.

इस जन आंदोलन में अहिंसा की शपथ ली गई और जब चौरी–चौरा गांव में हिंसा भड़क उठी तब गांधीजी ने इस आंदोलन को स्थगित कर दिया। सरकार ने इस परिस्थिति का लाभ उठाते हुए गांधीजी को गिरफ्तार कर लिया। 18 मार्च 1922 को अहमदाबाद में ऐतिहासिक मुकद्दमा चला और गांधीजी को छः वर्ष के कैद की सजा हुई।

महान् मुकद्दमा

FAST FOR UNITY

Gandhiji was released in February 1924, after undergoing an operation for appendicitis. Profoundly disturbed by communal riots in some parts of the country, in September 1924, he undertook at Delhi a 21 days' fast.

फरवरी 1924 में अपैन्डिक्स के ऑपरेशन के बाद गांधीजी रिहा कर दिए गए। देश के कुछ भागों में साम्प्रदायिक दंगे के कारण गांधीजी काफी व्यथित थे। सितम्बर 1924 में उन्होंने दिल्ली में 21 दिनों का उपवास किया।

एकता के लिये उपवास

BELGAUM CONGRESS

Congress elected Gandhiji as its President, the highest honour in its power. At Belgaum, in December 1924, Gandhiji emphasized the need for communal unity and Swadeshi. Subsequently he toured the country pleading for the same cause.

कांग्रेस ने गांधीजी को सभापति के रूप में चुना, यह कांग्रेस का सबसे बड़ा सम्मान था जो वह उन्हें दे सकती थी। दिसम्बर 1924 में बेलगांव में गांधीजी ने साम्प्रदायिक एकता व स्वदेशी की आवश्यकता पर बल दिया। इसके बाद गांधीजी ने इस उद्देश्य के लिए देश भर की यात्रा की।

बेलगांव कांग्रेस

TAGORE AND ANDREWS

Gandhiji had always held Poet Rabindranath Tagore in great respect. In May 1925, when he revisited Santiniketan, he had intimate communion with Gurudev Tagore and Deenabandhu C.F. Andrews.

टैगोर और एण्ड्रयूज़

गांधीजी सदैव कवि रविन्द्रनाथ टैगोर को बहुत अधिक सम्मान देते थे। मई 1925 में जब गांधीजी दुबारा शांतिनिकेतन आए तब उन्होंने गुरूदेव टैगोर और दीनबंधु, सी. एफ. एण्ड्रयूज़ से आत्मीय व अंतरंग मुलाकात की।

WITH C.R. DAS

Many eminent leaders of India too, like Chittaranjan Das, a leading lawyer who had sacrificed his princely practice in the service of the people and won the title of Deshbandhu-"Friend of the country", came under Gandhiji's spell.

चित्तरंजन दास के साथ

भारत के अनेक प्रसिद्ध नेताओं की तरह चित्तरंजन दास भी गांधीजी से प्रभावित हुए जो एक अग्रणीय वकील थे और अपने वैभवशाली वकालत के पेशे को छोड़ सारा जीवन लोगों की सेवा में लगाने लगे थे, उन्हें देशबंधु 'देश का मित्र' की उपाधि मिली।

BARDOLI SATYAGRAHA

Vallabhbhai Patel led the historic Bardoli Peasants Satyagraha in February 1928, against increase in land revenue. His fearless leadership in this struggle, which had Gandhiji's blessings and which ultimately succeeded, earned him the title of Sardar.

लगान की दर बढ़ाये जाने के विरोध में फरवरी 1928 में वल्लभभाई पटेल ने किसानों के ऐतिहासिक बारडोली सत्याग्रह का नेतृत्व किया। इस संघर्ष में पटेल के निडर नेतृत्व को जिसे गांधीजी का आशीर्वाद प्राप्त था, बड़ी सफलता मिली और उन्हें सरदार की उपाधि दी गई।

बारडोली सत्याग्रह

SALT SATYAGRAHA

People had been barred from making salt freely and a tax had been imposed on it. This hurt the people and Gandhiji led a band of devoted followers, on March 12, 1930 to Dandi, on the sea coast, over 200 miles to the south of Sabarmati to disobey the Salt Law.

भारतीयों को स्वतंत्र रूप से नमक बनाने से रोका जाने लगा और इसके लिये नमक पर कर लगा दिया गया। जनता इससे बेहद दुःखी थी और 12 मार्च, 1930 को गांधीजी अपने अनुशासित अनुयायियों के साथ दांडी के समुद्र तट की ओर नमक कानून तोड़ने चल पड़े जो साबरमती से लगभग 200 मील दक्षिण में स्थित है।

नमक सत्याग्रह

BREAKING THE SALT LAW

After 24 days' march, Satyagrahis reached Dandi. Gandhiji signed the breaking of the salt laws by picking the natural salt lying on the beach. When that act was repeated in thousands all over the country it posed a massive threat to the very existance of British rule in India.

24 दिन की यात्रा के बाद सत्याग्रहियों का दल दाण्डी पहुंचा। समुद्र किनारे पड़े कुदरती नमक उठाते हुए गांधीजी ने नमक कानून तोड़े जाने का संकेत दे दिया। जब पूरे देश में हजारों स्थानों पर यही प्रक्रिया दोहराई गई तब प्रशासन को समझ में आया कि यह तो भारत में ब्रिटिश शासन के अस्तित्व पर ही एक गंभीर संकट पैदा कर रहा है।

नमक कानून का उल्लंघन

MIDNIGHT ARREST

The Government decided to arrest the master-mind behind the movement: Gandhiji, and on May 5, at Karadi, the officers of the Law stole on him at midnight, like thieves in the night, awoke him from his sleep, and arrested him. Soon he was in Yeravda Prison.

सरकार ने निर्णय लिया कि इस आंदोलन के मुख्य सूत्रधार गांधीजी को गिरफ्तार कर लिया जाए और 5 मई को कराडी में आधी रात को कानूनी अधिकारियों ने चोरों की तरह छापा मारकर, उन्हें नींद से जगाकर गिरफ्तार कर लिया। शीघ्र ही उन्हें यरवडा जेल में डाल दिया गया।

गिरफ्तारी अर्द्ध–रात्रि में

KARACHI CONGRESS

After Gandhi-Irwin Pact in March 1931, the Civil Disobedience movement was suspended, Satyagrahis were released and Gandhiji agreed to participate in the Second Round Table Conference in England. The Karachi Congress on March 31, 1931, chose him as congress's sole representative at the RTC.

मार्च 1931 में गांधी–इरविन समझौते के पश्चात्, सविनय अवज्ञा आंदोलन को स्थगित कर दिया गया, सत्याग्रही रिहा हुए और गांधीजी इंग्लैंड में प्रस्तावित द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए सहमत हुए। कराची में 31 मार्च 1931 को गांधीजी को गोलमेज सम्मेलन के लिये कांग्रेस का एकल प्रतिनिधि चुना गया।

कराची कांग्रेस

LEAVING FOR LONDON

In the backdrop of unresolved communal issue at home he despaired of a political settlement. Yet, to give the conference a chance he boarded S. S. Rajputana for England on August 29 with Sarojini Naidu, Madan Mohan Malaviya, and his two secretaries. Kasturba came to see them off at Mumbai port.

साम्प्रदायिक समस्या का हल नहीं हुआ था और इसके बिना राजनैतिक समाधान हो पाने की संभावना को लेकर वह निराश थे। परन्तु फिर भी सम्मेलन को एक अवसर देने के उद्देश्य से गांधीजी 29 अगस्त को एस. एस. राजपुताना जहाज पर इग्लैंड जाने के लिये सरोजिनी नायडू, मदन मोहन मालवीय और अपने दो सचिवों के साथ सवार हुए। कस्तूरबा विदाई के समय मुम्बई बंदरगाह पर उपस्थित थीं।

लंदन जाने से पूर्व

FOND OF CHILDREN

On board ship, Gandhiji relaxed and rested. Much of his time spent at the spinning wheel and prayer meetings in which passengers of many nationalities took part. He also took time off to play with the children and fondle them, for like many great men, he was very fond of the company of the little ones.

बच्चों का सान्निध्य

गांधीजी का जहाज पर अधिकांश समय कताई करने और प्रार्थना सभाओं में व्यतीत होता था जिसमें विभिन्न राष्ट्रों के यात्री शामिल होते थे। अपनी व्यस्तता के बावजूद वह बच्चों के साथ खेलने के लिए समय निकाल लेते, उनसे लाड़–प्यार करते। अन्य महान् व्यक्तियों की भांति उन्हें भी बच्चों का सान्निध्य बहुत अच्छा लगता था।

ROUND TABLE CONFERENCE

The Round Table Conference dragged on for weeks and he made fervent plea for giving India her freedom. He strove hard behind the Conference to evolve a communal settlement, but as he had feared, the conference failed to reach an agreed solution to the political problem.

गोलमेज सम्मेलन

गोलमेज सम्मेलन कई हफ्तो खिंचता गया। गांधीजी ने भारत को उसकी स्वतंत्रता दिए जाने की पुरजोर वकालत की। सम्मेलन में गांधीजी ने साम्प्रदायिक समाधान के लिए अथक प्रयास किया, परन्तु जैसी कि उन्हें शंका थी, उनके प्रयास बेकार गए। राजनीतिक समस्या के लिए सहमति भरा समाधान इस सम्मेलन में नहीं हो सका।

IN HIS LOIN CLOTH

Gandhiji lived at Kingsley Hall in East End, the part of London where coal-miners and workers lived. When he called on His Majesty, King George V, at Buckingham Palace, he was dressed in his usual loin cloth, to the amazement of many westerners.

अपनी सामान्य पोशाक में

गांधीजी किंग्सले हॉल में ईस्ट एण्ड में रुके, यह लंदन का वह भाग था जो कोयला–खादान मज़दूर और अन्य मज़दूरों का निवास स्थान था। जब गांधीजी बकिंघम महल में, माननीय किंग जॉर्ज पंचम से मिलने गए तब वह अपनी चिरपरिचित घुटनों तक की धोती धारण किये हुए पहुंचे जिसपर बहुत से पाश्चात्य लोगों ने आश्चर्य प्रकट किया।

LANCASHIRE COTTON MILL

The Lancashire Textile industry had been badly affected by the boycott and Swadeshi campaign in India; scores of mills had been closed down and thousands of workers rendered jobless. Yet Gandhiji did not hesitate to visit the idle workers. And when they understood him, they cheered him.

गांधीजी किंग्सले हॉल में ईस्ट एण्ड में रूके, यह लंदन का वह भाग था जो कोयला–खादान मज़दूर और अन्य मज़दूरों का निवास स्थान था। जब गांधीजी बकिंघम महल में, माननीय किंग जॉर्ज पंचम से मिलने गए तब वह अपनी चिरपरिचित घुटनों तक की धोती धारण किये हुए पहुंचे जिसपर बहुत से पाश्चात्य लोगों ने आश्चर्य प्रकट किया।

लंकाशायर कपड़ा मिल

WITH WOMEN OF MILL WORKERS

Gandhiji took time off to meet and converse with the women-folk of the mill-workers during RTC. They welcomed him, surrounded him, shook hands with him and showed warm affection for him by greeting him as a friend, for he was a friend of the poor.

गांधीजी ने गालमेज सम्मेलन के दौरान मिल मज़दूरों की महिलाओं के लिए भी समय निकालकर उनसे बातचीत की। उन्होंने उनका स्वागत किया, उनको चारों ओर से घेर लिया, उनसे हाथ मिलाया और गर्मजोशी दिखाते हुए एक मित्र के रूप में उनका स्वागत किया क्योंकि वे गरीबों के दोस्त थे।

मिल मज़दूरों की महिलाओं के साथ

PLANTING A TREE

With characteristic and abiding faith in human nature and as a gesture of goodwill for people everywhere, Gandhiji planted a tree outside the Kingsley Hall, as he had always loved plants and trees and seen one life in all of them.

मानव प्रकृति में विशिष्ट और अटूट विश्वास के कारण और सभी जगह के निवासियों के प्रति सद्भाव प्रदर्शन हेतु गांधीजी ने किंग्सले हॉल के बाहर पौधारोपण किया। उन्होंने सदा पेड़ पौधों से प्रेम किया और उन सबमें जीवन की एकरूपता देखी।

पौधारोपण करते हुए

WITH ROMAIN ROLLAND

On the way back home to India, returning 'empty-handed' as he had feared, Gandhiji halted in Switzerland to meet and talk to Romain Rolland, the great savant and scholar who had done so much to familiarise him and his work to the West through his beautiful biography *Mahatma Gandhi*.

रोमां रोलां के साथ

जैसी गांधीजी को शंका थी, गोलमेज सम्मेलन से उन्हें खाली हाथ भारत लौटना पड़ा। इस वापसी यात्रा में वह मशहूर विद्वान, लेखक व चिंतक रोमां रोलां से मिलने और बातचीत के लिये स्विट्जरलैंड में रूके। रोमां रोलां वह साहित्यकार थे जिन्होंने उनकी बेहतरीन जीवनी 'महात्मा गांधी' के द्वारा उनके जीवन और कार्यों से पश्चिम जगत को अवगत कराने के लिए भरपूर प्रयास किया था।

YERAVDA CENTRAL PRISON

Gandhiji found the Government in truculent mood — Jawaharlal Nehru and Abdul Ghaffar Khan, two of his trusted comrades, had been arrested and imprisoned; he was himself arrested soon on January 4, and taken to Yeravda Prison once again.

गांधीजी ने वापस पहुंचने पर पाया कि सरकार निर्दयी बन चुकी है और उनके दो घनिष्ठ विश्वासपात्रों, जवाहरलाल नेहरू और अब्दुल गफ्फार खान को गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया है। उन्हें भी शीघ्र ही 4 जनवरी को सरकार ने गिरफ्तार कर फिर से यरवडा जेल भेज दिया।

यरवडा केन्द्रीय कारागार

AFTER THE EARTH QUAKE

In November 1933, he undertook a country-wide tour, taking to the masses the message of social reform, removal of untouchability and the opening of temples and public amenities to the Harijans. Bihar was struck by a great earthquake in January 1934, he was soon in the midst of the afflicted people.

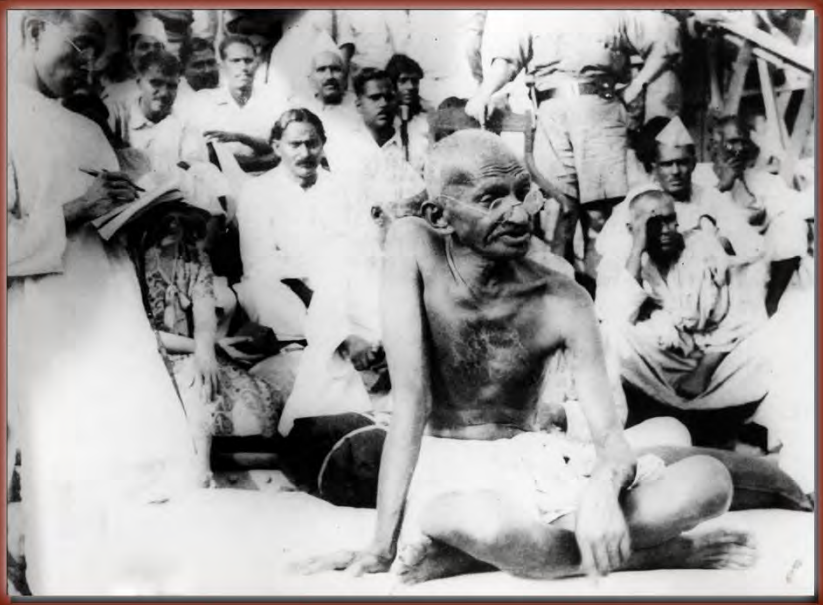

गांधीजी ने नवम्बर 1933 में सामाजिक सुधार, अस्पृश्यता निवारण और हरिजनों के लिए मन्दिरों और सार्वजनिक सुविधाओं के खोले जाने को लेकर जनसंदेश फैलाने के लिए देश भर की यात्राएं की। जनवरी 1934 में बिहार में भयावह भूकंप आया। गांधीजी भूकंप प्रभावित क्षेत्रों में पीड़ितों के बीच शीघ्र ही पहुंच गए।

भूकंप के पश्चात्

HARIJAN WORK AT MADRS

In this programme, Harijan uplift took a prominent and important place. Gandhiji undertook many tours, addressed meetings, exhorted people to abolish untouchability so that Hinduism may survive, purified and strengthened. Gandhiji travelled mostly in the South where he found response in abounding measure.

इस कार्यक्रम में हरिजन–उत्थान को प्रमुख एवं महत्वपूर्ण स्थान दिया गया। गांधीजी ने यात्राएं की, जनसभाओं को संबोधित किया और लोगों का आह्वान किया कि वे अस्पृश्यता का निवारण करें ताकि हिन्दू धर्म पवित्र बने, मजबूत हो और बच सके। गांधीजी ने अपनी अधिकांश यात्रा दक्षिण में ही की, यहां उन्हें लोगों का भरपूर समर्थन मिला।

मद्रास में हरिजन कार्य

NO JOB IS MEAN

In Gandhiji's eyes no job was mean, no task low. Attending to sanitary work such as removing nightsoil, cleaning refuse, was nothing degrading in his opinion. He himself did not hesitate to set the example in Wardha and Sevagram where he had settled down, intending to make the latter a model village of service.

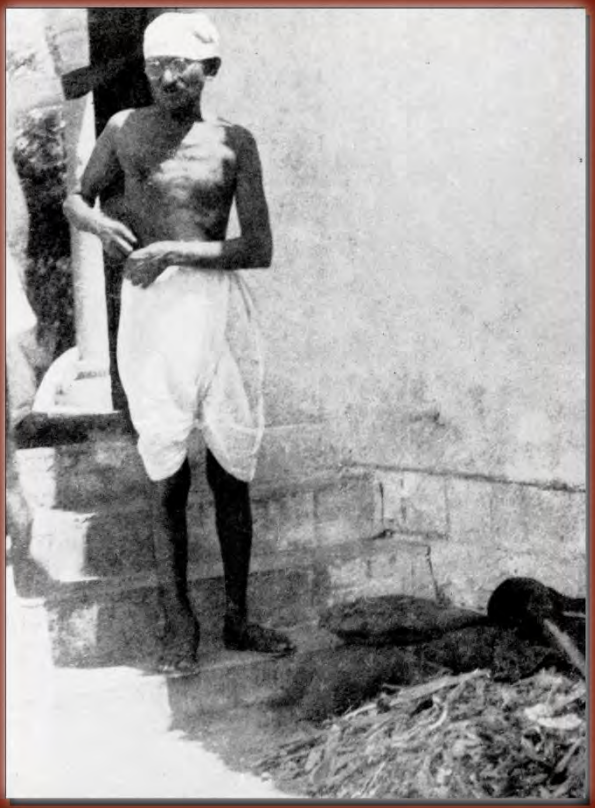

कोई कार्य छोटा नहीं

गांधीजी की दृष्टि में कोई भी कार्य छोटा या तुच्छ नहीं था। वह सफाई कार्य, पाखाना साफ करने या मैला उठाने में कोई बुराई नहीं देखते थे। उन्होंने वर्धा और सेवाग्राम में रहते हुए स्वयं इन कार्यों को बेझिझक किया और लोगों के समक्ष एक उदाहरण प्रस्तुत किया। गांधीजी सेवाग्राम को सेवा का एक आदर्श ग्राम बनाना चाहते थे।

TENDING A LEPER

All illness drew Gandhiji's sympathy and often he would himself attend on the ailing and nurse them back to health. Society had always looked upon leprosy as especially loathsome and shunned those afflicted by it. Here he is nursing a leper Parchure Shastri in the Ashram with compassion and courage.

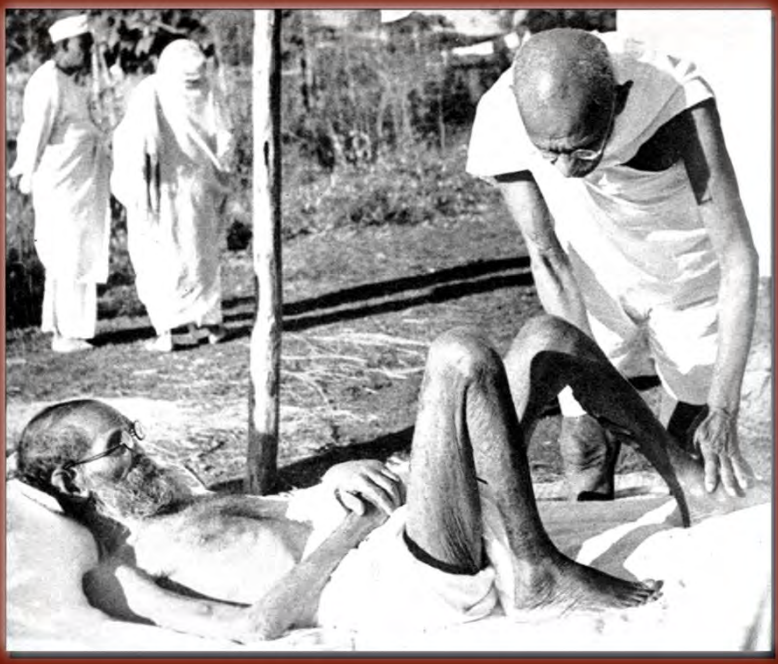

गांधीजी रोगियों से सहानुभूति रखते और कभी–कभी तो वे रोगी की सेवा–सुश्रूषा भी किया करते जिससे रोगी ठीक हो जाते। समाज में कुष्ठ रोगियों को घृणित समझा जाता था और उनसे बचकर रहने की प्रवृति थी। यहां आश्रम में गांधीजी एक कुष्ठ रोगी परचुरे शास्त्री की सेवा बड़े ही उत्साह और करुणा भाव से करते हुये।

कुष्ठ रोगी की सेवा

RIDING A BICYCLE

To Gandhiji appointments with the common people were no less important than those with the Viceroy and they had always to be kept with unfailing punctuality. And on one occasion he even rode by bicycle in order that he might arrive in time at a place of meeting.

गांधीजी के लिए आम लोगों से मिलना भी उतना ही महत्वपूर्ण था जितना कि वायसराय से और दोनों ही परिस्थितियों में वह समय की पाबंदी का सदैव ध्यान रखते थे। एक अवसर पर तो गांधीजी सभा में समय पर पहुंचने के लिए साईकिल चलाकर गए।

साईकल चलाते हुए

JOURNEY BY THIRD CLASS

From the earliest years of his public life, Gandhiji had chosen to travel by third-class in trains, as the class by which the poor masses of his country-men usually travelled and could afford to travel. It was one way in which he could meet them, be one of them and one with them.

गांधीजी ने अपने सार्वजनिक जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में रेल के तृतीय श्रेणी से यात्रा करने का निर्णय लिया। देश का आम आदमी प्रायः इसी श्रेणी में यात्रा करने का खर्च वहन कर सकता था। गांधीजी को आम जनों से घुलने–मिलने और उनकी समस्याओं को समझने का यही तरीका उचित लगा।

तृतीय श्रेणी की यात्रा

AT THE SPINNING WHEEL

To Gandhiji the Charkha was the wheel of life. To the millions of rural folk whom agriculture kept engaged for but a few months in the year, the spinning wheel provided a simple and ready means of adding a few pice to their meagre earnings. Gandhiji set the example, spinning himself in all his spare time.

गांधीजी के लिए चरखा जीवन का पहिया था और करोड़ों ग्रामीणों के लिए जो वर्ष भर में कुछ महीने कृषि कार्य के पश्चात् खाली रहते थे, उनकी नाममात्र की आय में कुछ पैसों की वृद्धि करने का यह एक सहज और सुगम माध्यम बन गया था। गांधीजी ने भी स्वयं अपने सभी खाली समय में चरखा कातकर ग्रामीणों के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत किया।

चर्खा कताई करते हुए

GANDHIJI'S JOURNALS

Gandhiji addressed thousands of meetings every-where in his life but, he also choose the written words to carry his message to the people. '*Indian Opinion*', '*Young India*', '*Navajivan*' and the '*Harijan*' group of weeklies became in their time the most eloquent and powerful mouthpieces of his great movements and work.

गांधीजी ने अपने लंबे सार्वजनिक जीवन में हर जगह हजारों सभाओं को संबोधित किया। उन्होंने अपने संदेश व विचारों को जनता तक पहुंचाने के लिये अपनी लेखनी को माध्यम बनाया। 'इण्डियन ओपीनियन', 'यंग इण्डिया', 'नवजीवन' और 'हरिजन' जैसे साप्ताहिक उनके महान आंदोलनों व कार्यों का एक सशक्त व शक्तिशाली मुखपत्र बने।

गांधीजी की पत्रिकाएं

SEVAGRAM HUT

Having disbanded Sabarmati Ashram, Gandhiji choose to settle down in an obscure village near Wardha, Segaon which later became Sevagram, because his heart was ever in the villages. And here living in a simple rustic hut, built out of rural materials, he continued to preside over the destinies of the nation.

साबरमती आश्रम को भंग करने के बाद गांधीजी वर्धा के निकट एक अनजाने से गांव सेगांव चले आए जो बाद में सेवाग्राम के नाम से जाना गया। चुंकि गांधीजी का हृदय गांवों में ही बसता था इसलिए वह यहां वे एक कुटिया में रहने लगे, जो स्थानीय सामग्रियों से बनी थीं, और वहीं से उन्होंने राष्ट्र की नियति में अग्रणीय भूमिका निभाई।

सेवाग्राम कुटिया

BA AND BAPU

Ba was mother not only to her own children or to the children and other inmates of the Sevagram Ashram, but she had become—mother to the people everywhere. She no doubt looked after her great husband's scanty needs, but attended equally to the wants of the Ashramites and the guests.

बा न केवल अपने बच्चों की मां अथवा सेवाग्राम आश्रमवासियों और अन्य बच्चों की मां थीं बल्कि वह हर जगह प्रत्येक लोगों की मां बन चुकी थीं। इसमें कोई शंका नहीं कि वह अपने पति की छोटी–छोटी जरूरतों का ध्यान तो रखती हीं थीं साथ ही आश्रमवासियों, अन्य लोगों व मेहमानों का भी समान रूप से पूरा ध्यान रखती थीं।

बा और बापू

WITH NEHRU

Gandhiji had cast a spell over Jawaharlal Nehru, as he had done on many others great in their own right, and drawn him into the nation's struggle for emancipation. Though different from Gandhiji in many ways, yet sharing his tremendous concern for the masses, Gandhiji had named him his "political heir".

गांधीजी ने कई मायनों में जवाहरलाल नेहरू पर अपना प्रभाव डाला जैसाकि उन्होंने अपने दम पर महान कई अन्य लोगों पर भी डाला था और उन्हें राष्ट्र के मुक्ति संग्राम से जोड़ा था। यद्यपि नेहरू गांधीजी से भिन्न थे, फिर भी आम जनमानस के प्रति अपनी गहरी चिंता गांधीजी के साथ साझा करते थे। गांधीजी ने उन्हें अपना "राजनैतिक उत्तराधिकारी" घोषित किया।

नेहरू के साथ

LOVE FOR ANIMALS

Living in Sevagram, Gandhiji had all of rural life around him. And the animals, too, for whom he had great compassion. He described the cow as a poem of pity, symbolizing to him the entire sub-human world. His love for man's fourfooted companions always expressed itself in simple gestures and acts like this.

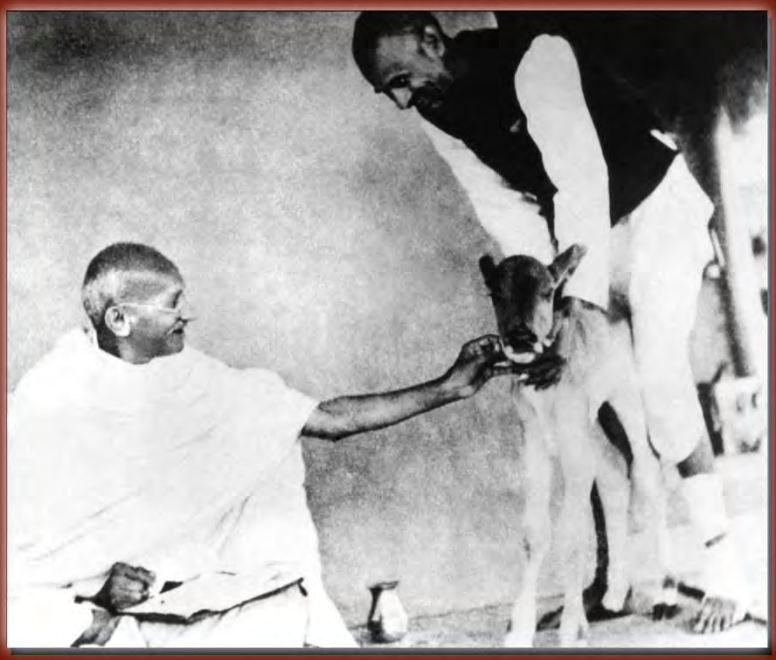

सेवाग्राम में रहते हुये गांधीजी के चारों ओर ग्रामीण परिवेश विद्यमान था। गांधीजी जीव–जन्तुओं के प्रति भी बहुत करूणा का भाव रखते थे। उन्होंने गाय को करुणा की कविता कहकर वर्णित किया जो सम्पूर्ण मानवोत्तर विश्व का प्रतिनिधित्व करती हैं। और मनुष्य के चार पैरों वाली इस सांगिनी के प्रति उन्होंने अपनी श्रद्धा सदैव कुछ इस प्रकार के सरल भावों और व्यवहारों से प्रकट की।

जीव–जंतुओं से प्रेम

CRAFT EXHIBITION AT FAIZPUR

It was at Faizpur that Gandhiji was able to first give concrete expression to his desire that the country's national activity must centre round her villages. Here he inaugurated the first of those simple rural craft exhibitions which thereafter became a recurring feature of Congress annual sessions.

यहां फैजपुर में गांधीजी ने पहली बार स्पष्ट शब्दों में अपनी इच्छा व्यक्त करते हुए कहा कि राष्ट्रीय गतिविधि देश के गांवों के इर्दगिर्द होनी चाहिए। यहां उन्होंने पहली बार सरल ग्राम्य शिल्प प्रदर्शनी का उद्घाटन किया जो आगे चलकर कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशनों का अनिवार्य अंग बन गया।

फैजपुर में शिल्प प्रदर्शनी

FUND COLLECTION

Wherever and whenever he met folk, whether at meetings, in conversational groups or while travelling, at railway platforms, he never failed to collect funds for Harijan uplift work—both the coppers of the poor and the currency notes of the rich.

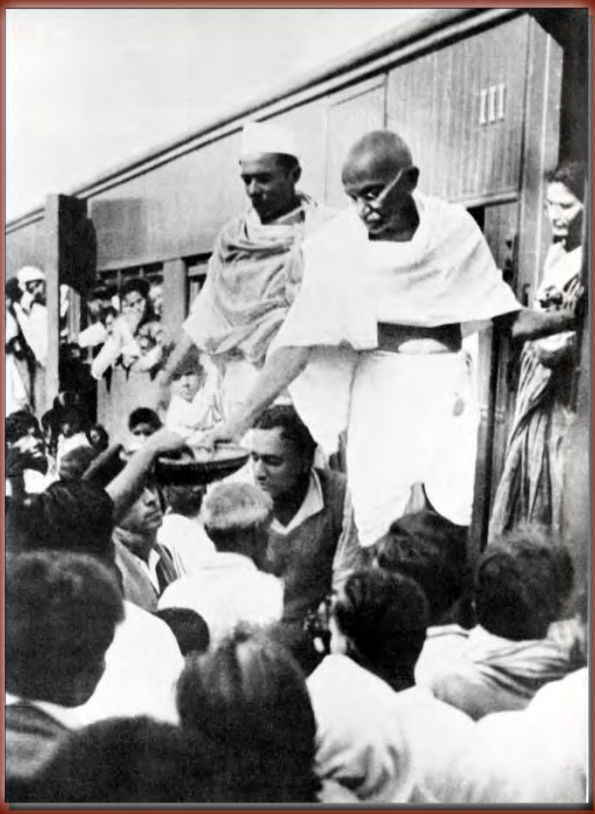

गांधीजी जहां कहीं भी लोगों से मिलते, चाहे सभाओं में, चर्चा समूहों में, यात्रा करते हुए, रेलवे प्लेटफार्म पर, वे कभी भी हरीजन उत्थान के लिए कोष एकत्रित करना नहीं भूलते – चाहे वह गरीबों का तांबे का सिक्का हो अथवा अमीरों के नकदी नोट।

कोष–संग्रह

GREAT MANIFESTO

His ceaseless journeying and persistent preaching and equally the practice of what he preached brought about a social revolution in the country. It was a historic day when the ancient Anantha Padmanabheshwar Temple admitted the “untouchables”.

अनवरत चलने वाली उनकी यात्राएं, सतत् उपदेश और उन उपदेशों के अनुरूप उनका जीवन, इन सबों के प्रभाव से देश में एक सामाजिक क्रांति आई। यह एक ऐतिहासिक दिन था जब अनंत पद्मनाभेश्वर मंदिर में ‘अस्पृश्यों’ को प्रवेश का अधिकार मिला।

महान् घोषणा

WITH NETAJI

Subhas Chandra Bose was chosen for the post of President of the Indian National Congress at Haripura in 1938. Gandhiji had admiration and affection for him, honoured him for his intrepidity, self-sacrifice and love of country, which made him the idol of the people.

सुभाष चन्द्र बोस को 1938 के हरिपुरा कांग्रेस अधिवेशन में अध्यक्ष पद के लिये चुना गया। गांधीजी उनकी प्रशंसा करते थे और उनसे स्नेह रखते थे; उनकी निर्भीकता, आत्म–त्याग और देश के प्रति प्रेम के लिए उनका आदर करते थे। इन्हीं गुणों से वे लोगों के चहेते बन गए थे।

नेताजी के साथ

HARIPURA CONGRESS

Haripura was a trial of strength and perhaps also a parting of ways for Subhas Chandra Bose. It was after this that Bose set up his Forward Block party, because of radical divergence of views with the Gandhian camp.

हरिपुरा कांग्रेस शक्ति परीक्षण का केंद्र बना और संभवतः सुभाष चन्द्र बोस के लिये अलग मार्ग चुनने का मौका। इस कांग्रेस के बाद बोस ने अपनी फारवर्ड ब्लॉक पार्टी का गठन किया। गांधीवादी शिविर से यह पार्टी भिन्न विचार रखती थी।

हरिपुरा कांग्रेस

PESHAWAR PUBLIC MEETING

Khan Abdul Ghaffar Khan, the leader of the Frontier people, popularly called the Frontier Gandhi, had worked a near miracle by weaning the fierce Pathans from ways of violence and made them 'Khudai Khidmatgars' or 'Servants of God', wedded to non-violence.

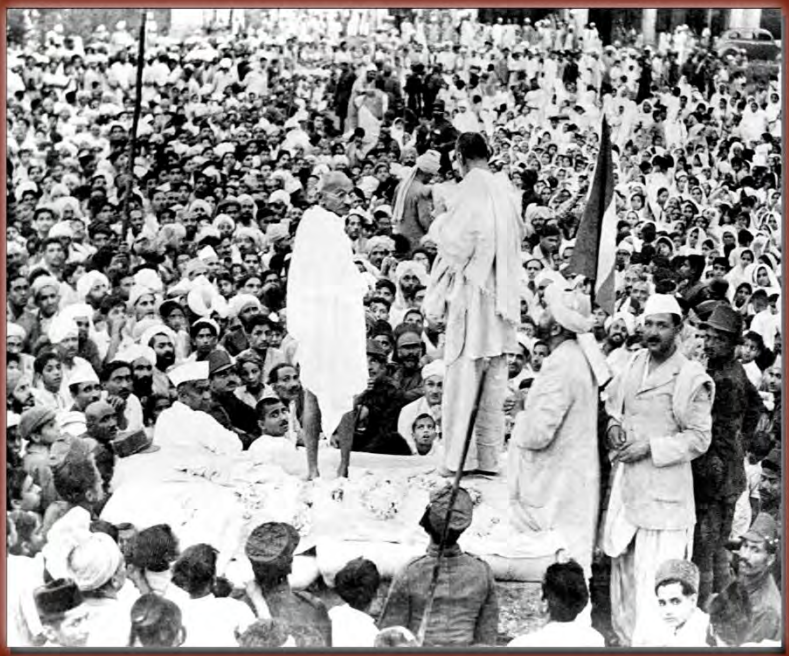

सीमांत लोगों के नेता खान अब्दुल गफ्फार खान, प्रचलित तौर पर सीमांत गांधी के नाम से जाने गये। इन्होंने लगभग चमत्कारिक ढंग से लड़ाकू पठानों को अहिंसा का पाठ पढ़ाया और उन्हें 'खुदाई खिदमतगार' या 'ईश्वर के सेवक' बना दिया।

पेशावर की सार्वजनिक सभा

WITH FRONTIER GANDHI

No more eloquent example of Gandhiji's tremendous influence, through his creed of non-violence, exists than in the life and work of Khan Abdul Ghaffar Khan. He was deeply bound to Gandhiji whom he understood and took implicitly as a man of God.

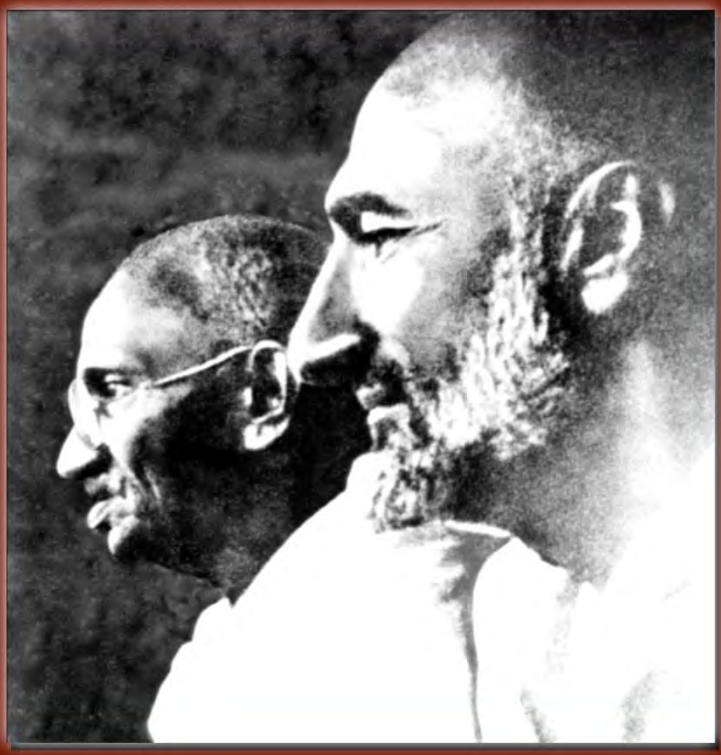

गांधीजी की अहिंसा का यदि किसी अन्य व्यक्ति के विचारों व कार्यों पर सबसे व्यापक असर पड़ा तो वह हैं खान अब्दुल गफ्फार खान। वे गांधीजी से अभिन्न रूप से जुड़े थे और मानते थे कि गांधीजी प्रत्यक्ष रूप से ईश्वर के व्यक्ति हैं।

सीमांत गांधी के साथ

RAJKOT FAST

When the ruler of Rajkot refused to part with power to the representatives of his subjects and in fact imprisoned and persecuted them, Gandhiji saw in it a challenge which could be answered only through a fast. He admitted his fallibility when he realized that the fruit of a fast is tainted with coercion.

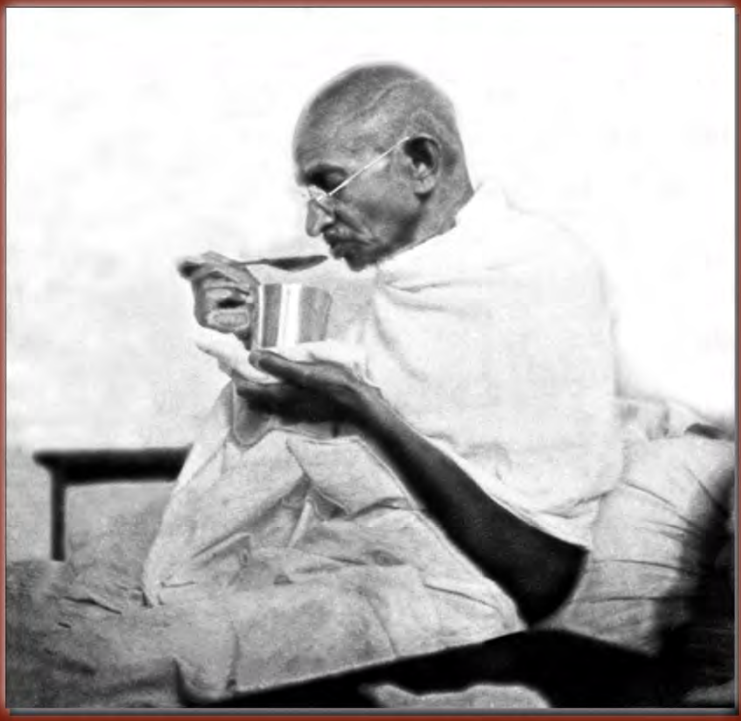

राजकोट उपवास

जब राजकोट के राजा ने अपनी प्रजा के प्रतिनिधियों को शासन में भागेदारी देने से मना कर दिया, यहां तक कि उन्हें जेल में डाला और सजा दी तब गांधीजी ने इसे एक चुनौती माना और उपवास से इसका जवाब दिया। और जब उन्हें लगा कि उनके उपवास में कठोरता शामिल है तब उन्होंने इसके परिणाम की भ्रामकता को स्वीकार भी किया।

AT DUM DUM PRISON

Gandhiji had his differences with politicians of diverse schools; but he readily conceded their patriotism. Whenever needed to intercede with the authorities to secure release of men imprisoned for their political deeds, he readily pleaded with them, as in this case of political prisoners at Dum Dum jail.

गांधीजी विभिन्न विचारधाराओं के राजनीतिज्ञों से मतभेद तो रखते थे, परन्तु उनकी राष्ट्रभक्ति को सहज स्वीकार करते थे। जब आवश्यकता होती तब राजनैतिक विचारों के कारण जेल में बंद कैदियों को रिहा करवाने के लिये वह अधिकारियों से भी बातचीत करते। दम दम जेल के राजनैतिक बंदियों के लिये भी उन्होंने ऐसा ही किया।

दम दम जेल में

OPENING OF TEMPLE

Gandhiji seldom went to temples, particularly as they had denied access to Harijans for worship. The great temples at Madurai and Palani he had visited, in fact, only after they had been thrown open to the Harijans. He opened the Laxminarain temple in Delhi.

गांधीजी मंदिर बहुत कम जाते थे क्योंकि मंदिरों में हरिजनों का पूजा के लिए आना निषिद्ध होता था। वास्तव में मदुरई और पालनी के महान मंदिरों का दौरा उन्होंने तभी किया जब उनके कपाट हरिजनों के लिए खोल दिए गए। दिल्ली में उन्होंने लक्ष्मीनारायण मन्दिर का उद्घाटन किया।

मंदिर का उद्घाटन

AFTER TALKS WITH VICEROY

The Viceroy summoned Gandhiji and Jinnah, along with Rajendra Prasad, for talks at New Delhi on November 1, 1939. Four days later, the Viceroy announced the failure of the talks. There could hardly be common ground between the Muslim League and the Congress.

वायसराय वार्ता के बाद

वायसराय ने गांधीजी, जिन्ना और राजेन्द्र प्रसाद को वार्ता के लिए 1 नवम्बर, 1939 को नई दिल्ली में तलब किया। उसके चार दिन बाद वायसराय ने घोषणा की कि वार्ता असफल रही। कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच बातचीत का कोई सांझा कार्यक्रम नहीं बन पाया था।

INDIVIDUAL SATYAGRAHA

The Provincial Congress Ministries resigned in protest against India's involvement in the World War II. With the Viceroy's declaration falling short of Congress expectations Gandhiji commenced Individual Satyagraha campaign on October 17, 1940, choosing Vinoba Bhave as the first Satyagrahi. He was arrested on October 21.

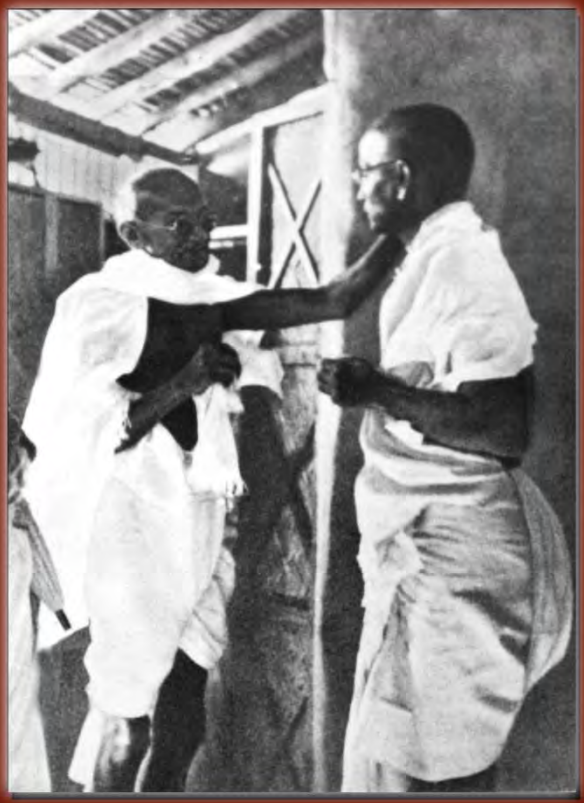

भारत को द्वितीय विश्व युद्ध में शामिल किये जाने के विरोध में प्रांतीय कांग्रेस सरकारों ने इस्तीफा दे दिया। वायसराय की घोषणा कांग्रेस की आशाओं के अनुरूप न होने के कारण गांधीजी ने 17 अक्तूबर, 1940 को व्यक्तिगत सत्याग्रह शुरू किया जिसमें विनोबा भावे को प्रथम सत्याग्रही नियुक्त किया। उन्हें 21 अक्तूबर को गिरफ्तार कर लिया गया।

व्यक्तिगत सत्याग्रह

WITH CRIPPS

On release of nearly 25,000 Satyagrahis, the Working Committee persuaded Gandhiji to take charge of Congress in January 1942. On March 11, the Cripps Mission was announced, and on March 22 Cripps met Gandhiji only to offer constitutional advance after the War. Gandhiji called it a "post-dated cheque".

सरकार द्वारा करीब 25,000 सत्याग्रहियों को छोड़ने के पश्चात जनवरी 1942 में कार्यसमिति ने गांधीजी को कांग्रेस का नेतृत्व करने का आग्रह किया। 11 मार्च को क्रिप्स मिशन की घोषणा हुई और 22 मार्च को क्रिप्स गांधीजी से मिला और युद्ध के बाद सांवैधानिक विकास का भरोसा दिया, परन्तु गांधीजी ने इसे "उत्तर दिनांकित चैक" की संज्ञा दी।

क्रिप्स के साथ

QUIT INDIA RESOLUTION

The stage was now set for the Quit India session of the AICC. On July 1, 1942 the CWC adopted the Quit India resolution, entrusted leadership to Gandhiji. On August 8, at Bombay Gandhiji issued the call "to do or die". But next morning, he and other leaders were arrested in a swoop at dawn.

कांग्रेस कार्यकारिणी समिति के लिए अब भारत छोड़ो सत्र का मंच तैयार था। 1 जुलाई को कार्य समिति ने गांधीजी के नेतृत्व में भारत छोड़ो प्रस्ताव को स्वीकार किया, 8 अगस्त को इस समिति की बम्बई में हुई बैठक में यह प्रस्ताव पारित हुआ और गांधीजी ने ''करो या मरो'' का नारा दिया। अगली उषाकाल से पूर्व ही उन्हें और अन्य नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया।

भारत छोड़ो प्रस्ताव

CROWD TEAR-GASSED

There was anger all over the leaderless land. The people acted on their own, indulged in meetings, demonstrations, outbursts of emotional frenzy. The Government un-leashed its "leonine" violence, resorted to tear-gas, lathi charges and firing .

नेतृत्वहीन देश में हर जगह आक्रोश व्याप्त था। जन साधारण स्वयं से ही निर्देशित हो रहे थे, सभाएं की जा रहीं थीं, प्रदर्शन हो रहे थे और असंतोष बाहर निकल रहा था। सरकार ने बर्बरता का सहारा लिया, अश्रु गैस का इस्तेमाल किया, लाठी चार्ज किया, गोलियां चलाई।

भीड़ पर अश्रु गैस

AGA KHAN PALACE

Gandhiji, Kasturba and Mahadev Desai were taken to the Aga Khan Palace in Poona. The Palace was destined to be more than a prison to the nation's beloved Bapu and Ba.

गांधीजी, कस्तूरबा और महादेव देसाई को पूना के आगा खां महल में ले जाया गया। राष्ट्र के प्रिय बापू और बा के लिए यह महल कैदखाने से बढ़कर उनका भवितव्य बना।

आगा खां महल

PASSING OF MAHADEV DESAI

The first to pay the price for the shock of Gandhiji's sudden arrest and its drastic implications was his devoted Secretary, Mahadev, more than a son indeed to Gandhiji. He died suddenly on August 15.

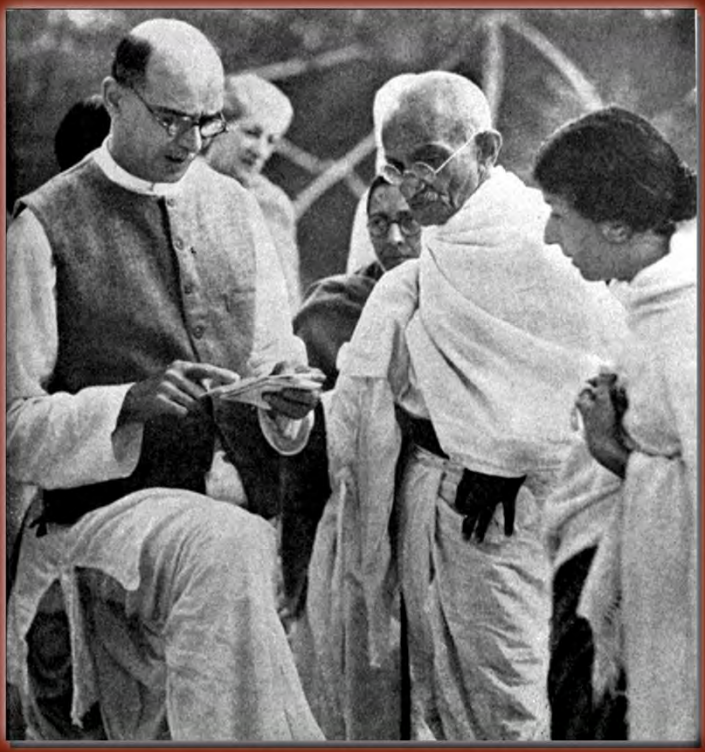

गांधीजी की अचानक हुई इस गिरफ्तारी का पहला जबर्दस्त खामियाज़ा उनके सचिव महादेव देसाई की मृत्यु के रूप में सामने आया जो गांधीजी के लिये वस्तुतः एक पुत्र से बढ़कर थे। अचानक 15 अगस्त को उनकी मृत्यु हो गई।

महादेव देसाई का निधन

PASSING OF KASTURBA

And then it was Ba's turn. His 21 days fast in February 1943, an ordeal at any time, now in her weakened state was a positive stroke of disaster. She suffered a series of heart attacks and then, on MahaShivratri day, February 22, 1944, passed away.

कस्तूरबा का अवसान

इसके बाद कस्तूरबा की बारी थीं। फरवरी 1943 में गांधीजी ने 21 दिन का उपवास प्रारंभ किया। कस्तूरबा के लिये उनका उपवास हमेशा ही अग्नि-परीक्षा से कम नहीं होता था, पर इस आयु में, स्वास्थ्य की बिगड़ती हालत ने विपत्ति के आघात को सकारात्मक अवसर दिया। उन्हें लगातार कई दिल के दौरे पड़े और अंत में महाशिवरात्री के दिन 22 फरवरी 1944 को उन्होंने शरीर त्याग दिया।

THE TWO SAMADHIS

So it came that the sombre precincts of the Aga Khan Palace became sanctified by the sepulchre of two great souls. The simple earthen mounds of the two Samadhis became to Gandhiji an altar of prayer, where he offered worship to God more than once.

इस प्रकार आगा खां महल का उदासीन अहाता इन दो महान् आत्माओं की समाधि से पवित्र हो गया। दो समाधियों के ये साधारण मिट्टी के टीले गांधीजी के लिए प्रार्थना की वेदी बन गए जहां उन्होंने दिन में एक से अधिक बार ईश्वर की उपासना की।

दो समाधियां

GANDHI JINNAH TALK

On release in May 1944, Gandhiji rested at Juhu in Bombay. But his heart was not at peace. In September he made one more sustained effort to win over Jinnah, so that communal settlement would facilitate and hasten the advent of freedom. But Jinnah insisted on a separate State for the Muslims.

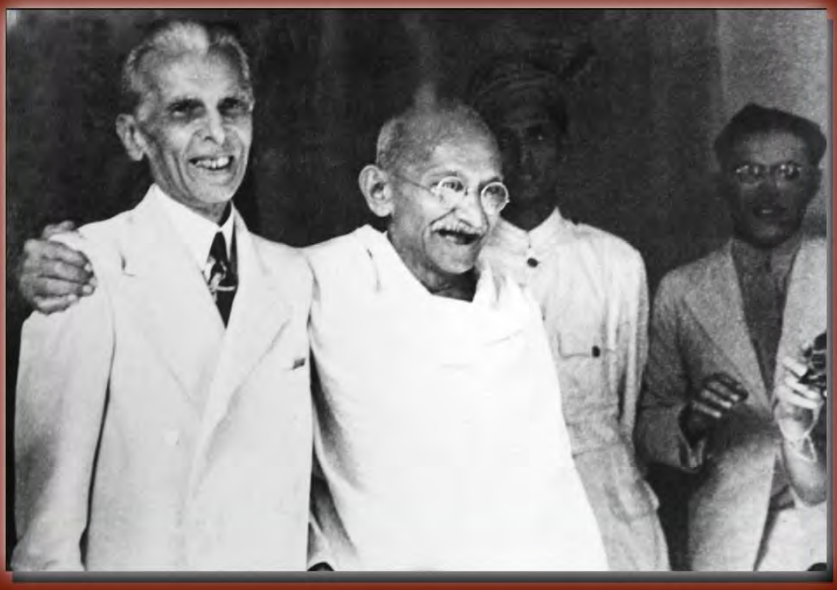

मई 1944 में गांधीजी रिहा हुए और जुहू, बम्बई में स्वास्थ्य लाभ लेने लगे, परन्तु उनका हृदय शांत नहीं था। सितम्बर में उन्होंने जिन्ना का हृदय जीतने के लिए एक बार फिर से स्थाई प्रयास किया ताकि साम्प्रदायिक समस्या का समाधान हो और स्वतंत्रता शीघ्र मिल जाए। परन्तु जिन्ना मुसलमानों के लिए पृथक राज्य की मांग पर अड़े रहे।

गांधी–जिन्ना वार्ता

TALK WITH VICEROY

At Simla where twice, once in June and again in July, the Viceroy brought the leaders to the Conference table. His efforts to set up an Executive Council of the nominees of the Congress and the League proved abortive. Gandhiji, though not attending the Conference, was available in Simla for counsel.

शिमला में दो बार–एक बार जून में और दूसरी बार जुलाई में–बातचीत हुई। यहां वायसराय ने नेताओं को परामर्श के लिए बुलाया परन्तु कांग्रेस और मुस्लिम लीग द्वारा मनोनीत सदस्यों वाली कार्यपालिका परिषद की स्थापना के वायसराय के प्रयासों को धक्का लगा। गांधीजी इस सम्मेलन में भाग तो नहीं ले रहे थे पर सलाह देने के लिए शिमला में मौजूद थे।

वायसराय के साथ वार्ता

INDIAN NATIONAL ARMY

The brave INA soldiers called on Gandhiji at Sevagram, and sang before him their songs of liberation. Gandhiji gave tribute to Netaji Subhas Chandra Bose and praised for his valiant efforts to weld the Indian Army in South-East Asia a united National Army.

आजाद हिन्द फौज के बहादुर सैनिक सेवाग्राम में गांधीजी से मिले और अपनी स्वतंत्रता के गीत गाकर गांधीजी को सुनाया। गांधीजी ने सुभाष चन्द्र बोस को श्रद्धांजलि अर्पित की और दक्षिण–पूर्व एशिया में भारतीय फौज को इकट्ठा करके संयुक्त आजाद हिन्द फौज बनाने के उनके कार्य और साहस की प्रशंसा की।

आजाद हिन्द फौज

AT PRAYER

The simple hut at Juhu and the Bhangi colony in Delhi were the venue of Gandhiji's daily prayer meetings which attracted people of all faiths equally. Gandhiji poured out his anguish over the fraternal strife, advised on problems which confronted the country, and was like a beacon light in the surrounding gloom.

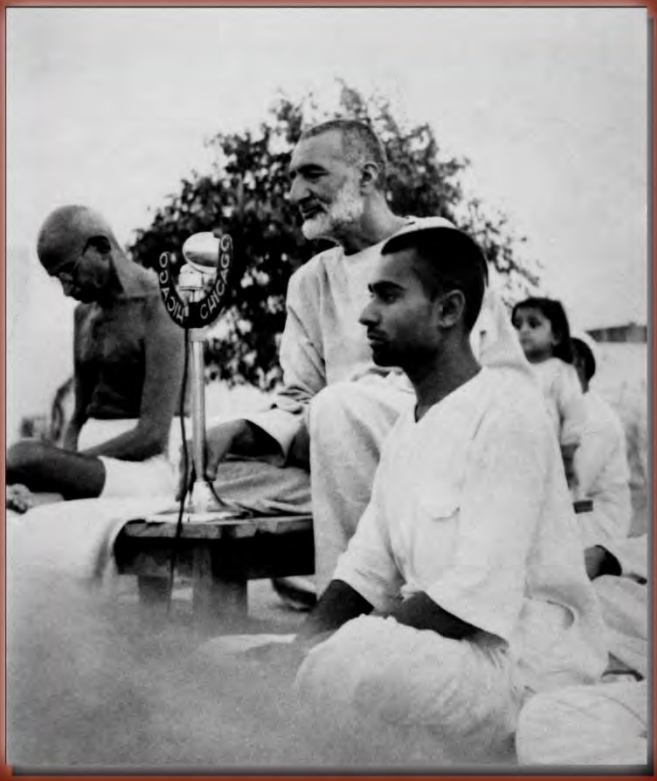

प्रार्थना में

जुहू में साधारण झोंपड़ी और दिल्ली की भंगी कॉलोनी गांधीजी की दैनिक प्रार्थना सभाओं की स्थली बन गई जिसमें सभी धर्मों के लोग समान रूप से आकर्षित होने लगे। गांधीजी भाई–चारे में आ रही दरार को लेकर अपनी वेदना उन लोगों के सामने प्रकट करते और देश के सामने खड़ी समस्याओं के निराकरण के बारे में सलाह देते। इस प्रकार वह चारों ओर फैले अंधकार के बीच एक प्रकाश स्तम्भ जैसे बन गए।

BOMBAY CONGRESS

Gandhiji had pleaded with the Congress that while it entered the Constituent Assembly, it should desist from forming the Interim Government, for he foresaw nothing but trouble ahead what with the Partition Plan of the British Government. But the Congress had willy-nilly accepted it.

गांधीजी ने कांग्रेस से संविधान सभा में शामिल होते हुए, अंतरिम सरकार की स्थापना से बचे रहने की सलाह दी। उन्होंने भांप लिया था कि ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रस्तुत विभाजन की योजना में गड़बड़ ही गड़बड़ है। परन्तु कांग्रेस ने आधे–अधूरे मन से इसे स्वीकार भी कर लिया।

बम्बई कांग्रेस

MOVING TO NOAKHALI

There was the "Great Killing" of Calcutta and then, in October 1946, massacre at Noakhali. Soon Gandhiji reached there to wipe the tears from every eye, to restore sanity to men become brutes and see them return to ways of peace and friendliness.

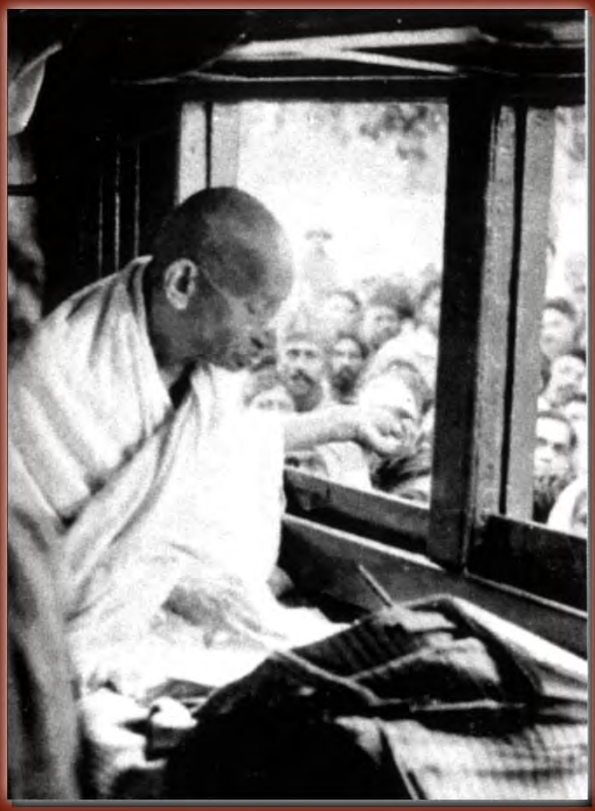

कलकत्ता में एक "बड़ा कत्लेआम", हुआ और फिर अक्टूबर 1946 में नोआखली में नरसंहार। शीघ्र ही गांधीजी वहां प्रत्येक की आंखों से आंसू पोछने और शैतान बने लोगों को साधुत्व का संदेश देने के लिए पहुंच गये। उनका उद्देश्य हिंसा कर रहे लोगों को शांति और मैत्रीभाव के मार्ग पर लाना था।

नोआखली जाते हुए

PARTITION RIOTS

His tired eyes beheld scenes of utter bestiality inflicted by the hand of brother raised against brother in one mad sweep of hatred which characterized the Partition riots.

गांधीजी की थकी आंखें एक भाई द्वारा दूसरे भाई के प्रति बरती जा रही घोर पाशविकता को देख रही थीं। घृणा और पागलपन विभाजन के दंगों की विशेषता थी।

विभाजन के दंगे

PILGRIM OF PEACE

Now was he the "lonely pilgrim of peace", walking barefoot from village to village, appealing for good sense, stimulating courage, restoring confidence, reviving trust and love so that the wounds could be bound up and men could live in amity.

अब वह "शांति के एकल तीर्थयात्री" रह गये थे, गांव गांव नंगे पैर घूम रहे थे, लोगों से सद्भावना की अपील कर रहे थे, उनमें उत्साह भर रहे थे, आत्म–विश्वास पैदा कर रहे थे, प्रेम व विश्वास को पुनः स्थापित कर रहे थे ताकि घावों को भरा जा सके और लोग आपस में सौहार्दपूर्वक रह सकें।

शांति का तीर्थयात्री

RIOTS IN BIHAR

Likewise, when the forest fire of communal strife spread to Bihar, the call came to him to move men's minds back to peace and co-existence. He toured the riot-affected villages. He spoke and brought solace and hope to the refugees.

इसी प्रकार जब साम्प्रदायिकता की जंगली आग बिहार में फैली तब गांधीजी वहां फिर से जन–मानस को शांति और सह–अस्तित्व की ओर प्रवृत्त करने के लिए पहुंच गए। उन्होंने दंगा–ग्रस्त गांवों का दौरा किया। उन्होंने शरणार्थियों से बात की, उन्हें सांत्वना दी और उनमें आशा का संचार किया।

बिहार के दंगे

COMMUNAL VIOLENCE

This was an example of the incredible horror of the communal holocaust screened, but not hidden, from the eye. Gandhiji saw and his heart bled ...

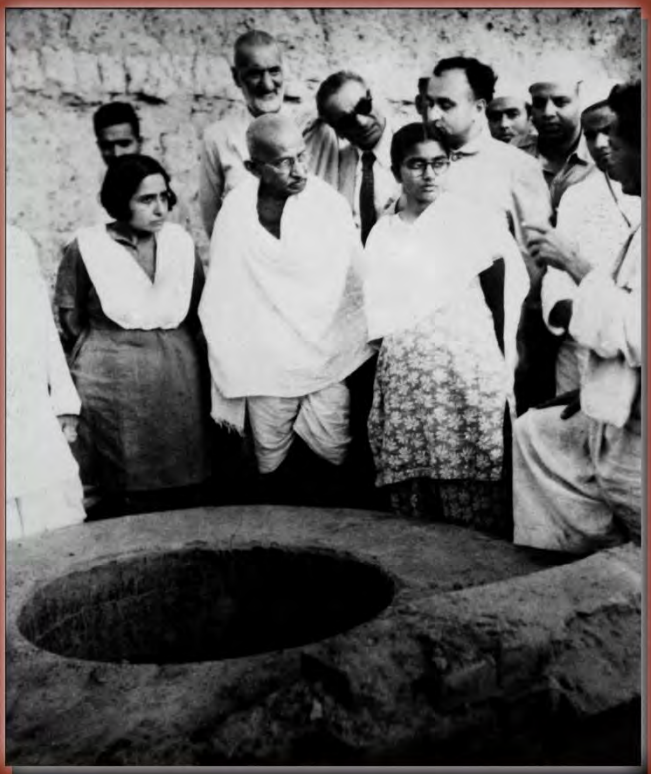

इस साम्प्रदायिक हिंसा के सचल–चित्र ने अतुलनीय डर का एक ऐसा उदाहरण प्रस्तुत किया था जो निगाहों से छिपा न रहा। गांधीजी ने इसे देखा और उनका हृदय बिलख पड़ा ...

साम्प्रदायिक हिंसा

WITH MOUNTBATTEN COUPLE

When in January 1947, Lord Mountbatten, last of the British Viceroys, arrived in New Delhi, determined to transfer the reins of power to Indian hands, he sought Gandhiji's advice and help to bring about the transformation.

जब लार्ड माउंटबेटन जनवरी 1947 में आखिरी ब्रिटिश वायसराय बनकर नई दिल्ली आए तब वह भारतीयों के हाथों में सत्ता सौंपने के लिए दृढ़संकल्प थे। उन्होंने इस रूपांतरण की प्रक्रिया को पूरा करने के लिये गांधीजी की सलाह और मदद मांगी।

माउंटबेटन दंपत्ति के साथ

MESSAGE OF ASIA

While, on the one hand, there was communal carnage in the country, on the other Delhi had become the venue of the historic meet of the representatives of Asian Nations. In April 1947, Gandhiji recalled to them that the message of Asia was the Message of the Buddha, the message of love, not the message of the atom bomb ...

एक ओर जहां देश में साम्प्रदायिक हत्याएं हो रही थीं वहीं दिल्ली एशियाई राष्ट्रों के प्रतिनिधियों की ऐतिहासिक मुलाकात का मंच बना था। अप्रैल 1947 में गांधीजी ने उनको याद दिलाते हुए कहा कि एशिया का संदेश बुद्ध का संदेश है, प्रेम का संदेश है, न कि परमाणु बम का संदेश...

एशिया का संदेश

WITH THE REFUGEES

Gandhiji went to all that were heavily laden and in distress; thousands of uprooted, afflicted, outraged refugees camping whether at Purana Quilla, Mehrauli or Hardwar.

गांधीजी भारी मुसीबतों और कष्टों से घिरे उन सभी लोगों के पास गए जो हजारों लाखों की संख्या में बेघर हो गए थे, दुःख–दर्द से पीड़ित थे, ये सभी अपमानित शरणार्थी पुराना किला, महरौली या हरिद्वार के शिविरों में रह रहे थे।

शरणार्थियों के साथ

DAWN OF FREEDOM

When Independence came at last and the proud tri-colour of the country fluttered and waved from its ramparts, in fulfilment of Netaji's dream and promise, Gandhiji was carrying out his mission of compassion among the riot-torn people of Calcutta.

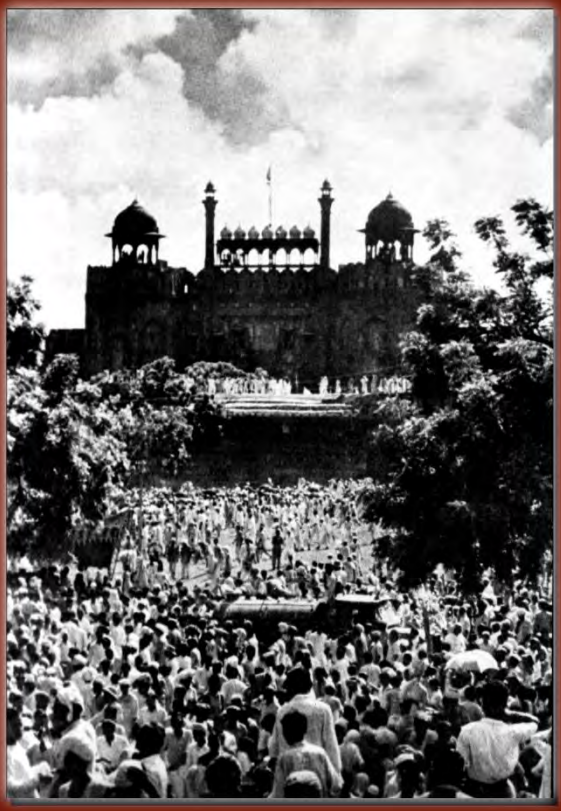

स्वतंत्रता का आगमन

अंततः जब स्वतंत्रता प्राप्त हुई और नेताजी के सपने और वादे के अनुरूप देश की शान, तिरंगा, इसकी प्राचीरों से लहरा उठा तब गांधीजी कलकत्ता में दंगा प्रभावित लोगों के बीच अपनी करूणा का अभियान चला रहे थे।

PEACE AT CALCUTTA

Gandhiji's tireless efforts and his fast restored peace between the warring communities as no military force could have done. Lord Mountbatten called him his "one-man Boundary Force" . . . There were scenes of fraternization on the day of Id at the Calcutta maidan . . .

गांधीजी के अथक प्रयासों और उनके उपवास के कारण दंगों में संलिप्त समुदायों के बीच शांति स्थापित हुई जो कोई भी सशस्त्र सेना नहीं कर सकती थी। लॉर्ड माउंटबेटन ने तब उन्हें "एकल मानव सीमा बल" कहकर संबोधित किया। ... कलकत्ता के मैदान में ईद के दिन चारों ओर भाईचारे की भावना ने साक्षात् रूप धारण किया...

कलकत्ता में शांति

PRAYER MEETING

Now was he found wanting when the call came from the country's capital: Delhi. Deeply distressed by the murder, loot and worse in the city, he could do little more, it appeared first, than to exhort the faithful who came to prayer to abjure violence.

जब देश की राजधानी में आवश्यकता पड़ी तो वह खुद को रोक नहीं पाए। दिल्ली हत्या और लूट से बुरी तरह पीड़ित थी, इस कठिन परिस्थिति में पहले तो उन्हें लगा कि वह ज्यादा कुछ नहीं कर सकते, फिर उन्होंने प्रार्थना में आने वाले विश्वासपात्र लोगों से कहना प्रारंभ किया कि हिंसा का रास्ता छोड़ दें।

प्रार्थना सभा

THE LAST FAST

When prayer proved powerless to restrain and lower the arm upraised to slay, he had recourse to the Satyagrahi's ultimate weapon. On January 13, 1948, he undertook a fast till peace returned to the capital or be perished in the attempt.

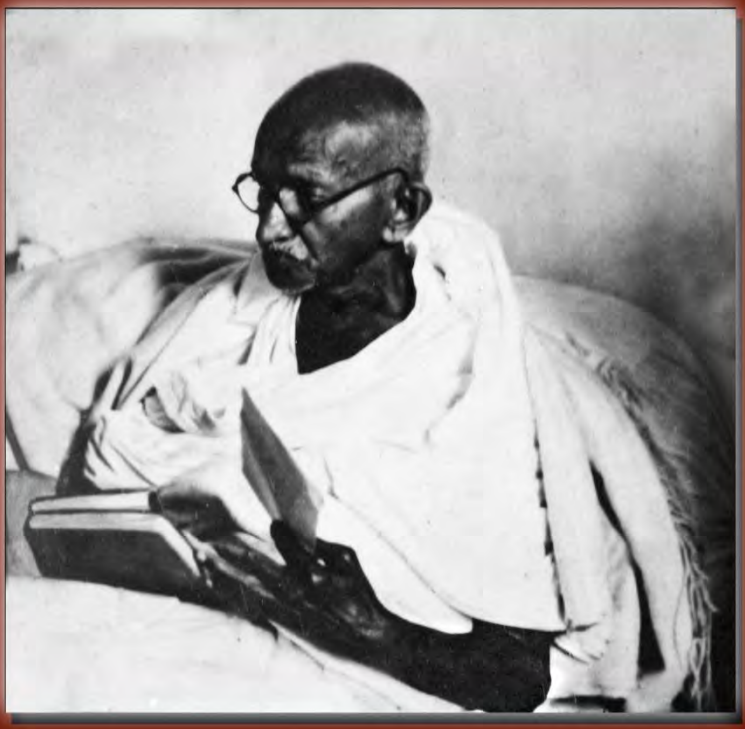

अंतिम उपवास

जब प्रार्थना का प्रभाव भी लोगों को हथियार फैंकने के लिये तैयार करने में अक्षम साबित हुआ तब उन्हें सत्याग्रही के अंतिम अस्त्र का प्रयोग करना पड़ा। 13 जनवरी 1948 को उन्होंने इस संकल्प के साथ उपवास शुरू किया कि जबतक दिल्ली में शांति बहाल नहीं हो जाती तबतक वह उपवास जारी रखेंगे चाहे इस प्रयास में वह मिट क्यों न जाएं।

TO THE PRAYER GROUND

Even during the fast and after breaking it, Gandhiji insisted on attending his usual prayers, despite great physical weakness.

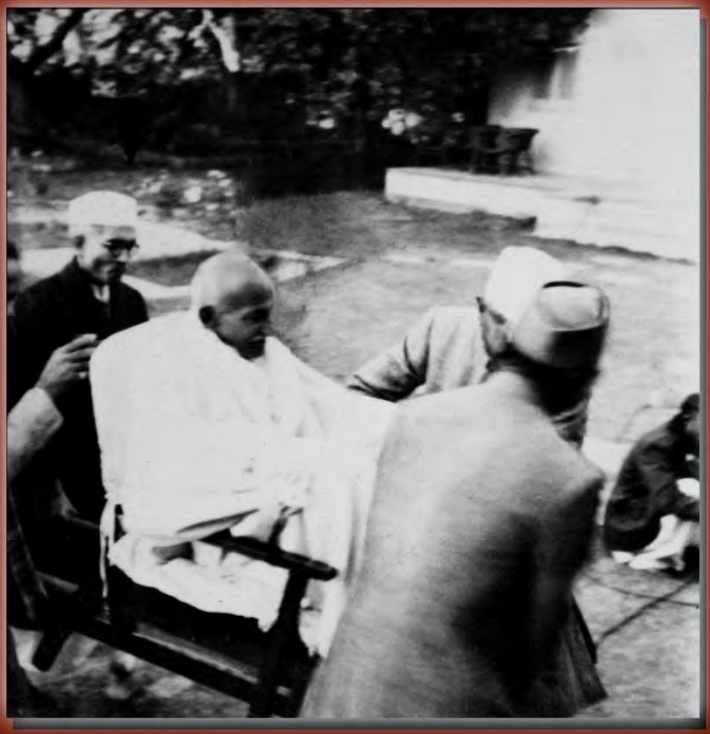

उपवास के दौरान और उसके पश्चात् भी गांधीजी ने अपनी नियमित प्रार्थनाओं में जाने का आग्रह जारी रखा जबकि उन्हें काफी कमजोरी का भी सामना करना पड़ रहा था।

प्रार्थना स्थल की ओर

AT MEHRAULI URS

If the Hindus, Muslims and Sikhs of Delhi thoroughly cleaned their hearts and made up their minds never again to allow the fratricidal strife to raise its head, India and Pakistan—united in a brotherly bond—could together command the respect of the world. Hearts and hands met at Mehrauli.

यदि दिल्ली के हिन्दू, मुसलमान और सिख लोग अपने हृदयों को साफ कर लें और यह प्रण लें कि वे पाश्विक वृत्तियों को पुनः सिर नहीं उठाने देंगे, तब भारत और पाकिस्तान भाईचारे के धागे में बंधकर आगे आ सकते हैं और संसार का सम्मान पा सकते हैं। महरौली में हृदयों और हाथों का मिलन हुआ।

महरौली में उर्स

LAST PRAYER, 29.1.1948

It was to be his last prayer ; there had been a bomb explosion on January 20 at the prayer ground and a portion of the compound wall had been blown off. The man was set at liberty . . . Next time the assassin's aim was accurate and deadly. Gandhiji fell, with the words "Hey Ram" on his lips . . .

यह उनकी अंतिम प्रार्थना सिद्ध हुई; प्रार्थना स्थल पर 20 जनवरी को बम विस्फोट किया गया था और दीवार का एक हिस्सा क्षतिग्रस्त भी हो गया था। दोषी व्यक्ति को स्वतंत्र कर दिया गया ... अगली बार हत्यारे का उद्देश्य सटीक और प्राणघातक था। गांधीजी गिरे और उनके होठों पर शब्द थे, "हे राम"।

अंतिम प्रार्थना, 29.1.1948

THE LAST REPOSE

Here he lies in his last repose, one who in his tireless pilgrimages in the service of the people had known no rest, no respite. The long journey was at an end.

यहां वह अपने अंतिम विश्राम में हैं, लोगों की सेवा हेतु अपनी अथक तीर्थयात्रा में कोई आराम, कोई राहत नहीं चाहने वाली उनकी इस लंबी यात्रा का अंत हुआ।

अंतिम विश्राम

LAST JOURNEY

Millions mourned his passing away, and they accompanied the earthy tabernacle which had houses his invincible spirit to the sandalwood and flower-strewn pyre at Rajghat, while the flags of all countries and the United Nations were lowered in grief and homage.

उनकी मृत्यु करोड़ों लोगों को शोकाकुल कर गई, लोग उनके पार्थिव शरीर के साथ हो लिये जिसमें कभी उनकी अपराजित आत्मा थी और राजघाट में चंदन की लकड़ी और फूलों से सजी चिता पर उसे रखा जबकि शोक और श्रद्धांजलि के तौर पर सभी देशों और संयुक्त राष्ट्र संघ ने अपने–अपने झंडे झुका दिए।

अंतिम यात्रा

THE LAST RITE

And the flames fed on rich ghee and sandalwood soon reduced his earthy tabernacle to fragrant ashes, and so came about the consummation.

जल्द ही घी में लिपटी चंदन की लकड़ियों से चिंगारी भभक उठी जिसने उनके पार्थिव शरीर को जल्द ही सुगंधित अस्थियों में परिणत कर दिया और इस प्रकार से क्रिया–विधि का अंत हुआ।

अंतिम आहुति

CONSIGNING THE ASHES

Next day people collected the ashes and put them in copper urns. On the twelfth day, they consigned the ashes to the holy rivers of the land, rendering them holier than ever as they carried their precious cargo to the ocean waters and mingled with them.

अगले दिन लोगों ने उनकी अस्थियों को ताम्र कलश में एकत्रित करके रखा। बारहवें दिन उन अस्थियों को देश की पवित्र नदियों में विसर्जित किया जिससे ये नदियां और भी पवित्र बन गईं और इस अमूल्य भार को महासागर तक ले जाकर उसमें समा गईं।

अस्थि प्रवाह

THE RAJGHAT SAMADHI

People from all nations have bowed at the simple Samadhi. He did not want any memorial for himself but a place in the hearts and memories of men so that the spirit of man which he had liberated would never again stoop to deeds unworthy of him.

सभी देशों के लोगों ने इस साधारण सी समाधि के आगे अपना शीश झुकाया। वह किसी स्मारक के आकांक्षी नहीं थे बल्कि लोगों के हृदयों व स्मृतियों में अपना स्थान चाहते थे ताकि मनुष्य की आत्मा जिसे उन्होंने मुक्ति दिलाई थी वह वैसा काम कभी न करे जो उन्हें अप्रिय थे।

राजघाट समाधि

As the helpmate (of Gandhi) she exercised great and beneficent influence, sacrificed herself for the ideals which she represented and stood by his side in dark days as in bright . . . As a noble type of womanhood she excelled in these values and leaves behind a splendid heritage.

— General Smuts

एक सहयोगिनी के रूप में उन्होंने गांधीजी पर हितकर प्रभाव डाला, उनके जीवन के उत्थान और संकट के दिनों में एक समान साथ खड़े रहकर उन आदर्शों के लिये बलिदान किया जिनका वह प्रतिनिधित्व करती थीं . . . एक परोपकारी महिला के तौर पर उन्होंने इन मूल्यों के अनुरूप अपने व्यक्तित्व का विकास किया और अपने पीछे शानदार चिरकालिक परम्पराएं छोड़ गईं।

– जनरल स्मटस्

Generations to come, it may be, will scarce believe that such a one as this ever in flesh and blood walked upon this earth.

— Albert Einstein

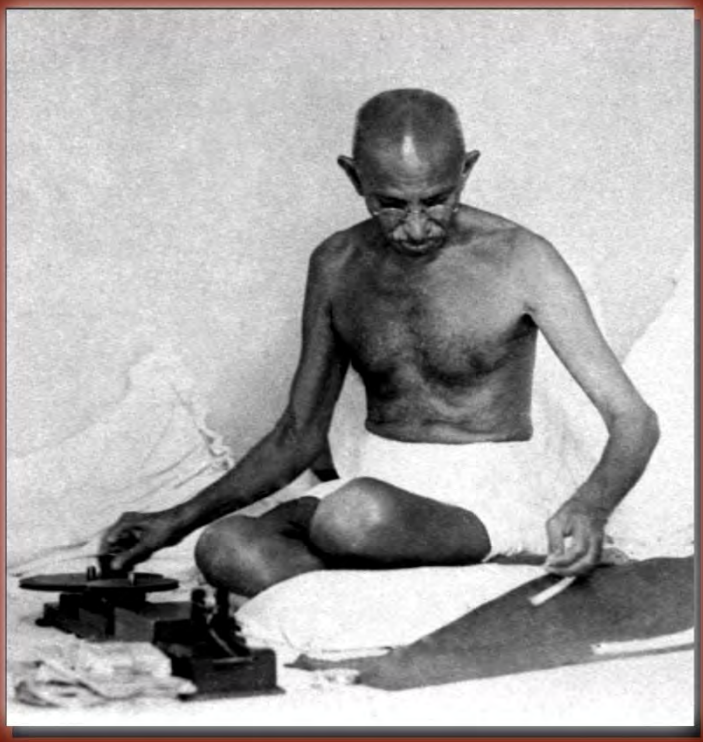

आने वाली पीढ़ियां शायद ही इस बात पर यकीन करें कि ऐसा हाड़–मांस का एक व्यक्ति कभी इस धरती पर भी चला था।

– अल्बर्ट आइन्सटाइन